Shri Hari

Core Mota Mandir - Sewa Kram
www.vallabhacharya-agrahara.org
www.vallabhacharyakrupa.org
(Pushtimargiya Research Portal)

Sansthan
Shrimad Gokulnathji Maharaj
Mota Mandir

Core Mota Mandir : Pracheen Sewa Kram
(Old Photo Copy)

Following is the incalculable wealth
I have received from my
Respected Parents and Respected Mukhiyaji.

Goswami Gokulnath

श्रीकृष्णायनमः॥ श्रीगोपीजनवल्लभायन
मः॥ अथजन्माष्टमी व्रतनिर्णय लिख्यते॥ श्री
मद्गोस्वामि विठ्ठलनाथजीदीक्षित चरणैः स्व
कृत जन्माष्टमी निर्णय सूर्योदये सप्तमीवेध
स्वीकृतः तद्वेधो द्विविधः साक्षात्स्पर्शना
त्मकः पारिभाषिक स्वतंत्र साक्षात्स्पर्शनात्मकः
पारिभाषिक सूर्योदये सप्तमी वेधो स्वीकारेपा
रिभाषीक सूर्योदये सप्तमीवेधो आयातिकृतः
तद्धर्मावछिन्न प्रकारत्ताशालित्वं उभयत्र व
र्त्तते तस्मात् व्रते पारिभाषिक वेधोस्वीकर्तव्यः
सप्तमि विद्धा निषेधवाक्यानां तद्दर्शनात् तस्मा
त् पारिभाषिक स्विकारे स्वल्पोपि दोषो नायाति
इतिपारिभाषिकमेव सिद्धं॥ तथाहिपारिभा
षिकं दर्शयति कालनिर्णये॥ अगस्त्य संहिताव
चनं॥ नाडीका षट पंचास शन्मान सत्वेकोधिको
रूपाः उष्काकीट पंचाशत् शेषः सूर्योदय स्प
र्शिनः तस्माद्यष्ट पंचास घटिका परिकल्प मा
त्रासप्तमि चेतदा व्रतंत्याज्यं नवम्या मेव कर्त्तव्यं
पूर्वविद्धाष्टमियानु उदये नवमी दिने मुहूर्त
मपि संयुक्ता संपूर्णा साष्टमिभवेत् कला

काष्ठ मुहूर्त्तापि यदा कृष्णाष्टमी तिथि ।। नवम्यासैव

साग्राह्या सप्तमी संयुतानही ।। इति पद्म पुराणेवा

क्येविरोध अनेकवचनानिसंति ।। ननु मुख्यार्थे

संभवतिसति गौण कल्पना अन्याय्यात् इती

चेत न मुख्यार्थेस्तु सामान्य शास्त्रेणोक्तः परिभाषि

कस्तु विशेषशास्त्रेणोक्तः सामान्यानेशे

योवलवान् तस्मात् परिभाषिक सूर्योदय जन्मा

ष्टमीव्रतेग्राह्य वेधवर्जितकलाधिक्य अवणा

न् कृतानु श्रावणे मासि अष्टमी रोहिणीयुता

किंपुनर्बुधवारेण सोमेनापि विशेषतः किंपुनर्न

वमीयुक्ता कुल कोटचस्तु मुक्तिदा इति आदोपूर्व

मेव इदृक्संशये प्राप्ते गोस्वामि गोविंद गोपेंद्र मुर

लीधरचरणै निर्णय: कृत: शास्त्रार्थमवलोक्य

इति दिक् ।। इति जन्माष्टमी निर्णय समाप्त: ।।

अथ श्रीनवनीत प्रियाजीके मंदिरकी वरसदि

नके उत्सव नकीरीत सिंगार सामग्रीसखड़ी न

यांअनसखड़ी तथा इधाधरकी लिख्यते ।। भादो

वदी पंचमी ।। टीकेतको श्रृंगार वस्त्र कसूमल

पीरीचूनड़ीके ओढनीपीरी चूनड़ीकी टीवकीकी

लहरीयाभांतिके पाग पीरीचूनड़ीकी लहरीया

भांतिके आभरण पन्नाके माला मोती पन्ना मिल
माकी॥ गोपालवल्लभमे मनोरके लडुवा॥ मेदापा
व०॥ घृतसेर०॥ चोरीठा ०। खांडसेर ऽ१॥ सुगं
ध मासा ४ ॥भादो वदी॥ ६ ॥ टीकेतको श्रृंगार

वस्त्र हरे लहरीयाके श्रीमस्तक ऊपर पाग आ

भरण मिलमा हीराके नथी मोराकके धरे॥ गोपा

लवल्लभमे मेबाटीके लडुवा॥ मेदा सेर ऽ॥ घृत
सेर ऽ॥ खांडसेर ऽ१॥ मिश्री ऽ॥ सुगंधमासा ४
मेवो मोर ०॥
भादोवदी॥ ७ ॥ टीकेतको श्रृंगार॥ वस्त्र गुलेनार रं
गके कसमल॥ श्रीमस्तक पर पाग॥ आभरण
हीराके धरे॥ गोपालवल्लभमे घेवर॥ मेदा ऽ॥
घृतसेर ऽ॥ खांडसेर ऽ२॥ सेनभोगमे॥ छ
टीकी सामग्री मेदाकी पूरीको मेदा सेर ऽ३ घृत
सेर ऽ॥ खाजाफीके मेदासेर ऽ३ घृतसेर ऽ१॥
तोरईके चकताको बेसन आना ऽ। साक नथा चक

ताको मिलके घृतसेर ऽ॥ सीरा कदे चनकोर खा

सेर ऽ१ घृतसेर ऽ१ खांड सेर ऽ२ चिरोजी आ
ना ॥ बूरासेर ऽ॥ मुरवा आमको बूरासेर ऽ॥
घृतसेर ऽ खांडसेर ऽ४। बेसन आना ।= चो
रीठा ऽ। मिश्री ऽ॥ मेवा ऽ॥= चिरोंजी ।= सुगं

न. धमास्ता ४ सोंठकीवुकनीतामें हींग फुलाइकेनां
२ खनो॥छटीकेभोगमे दूधकीहंडी सेर ५ बूरासेर
ऽ१॥ ॥अथभादोवदीअष्टमीजन्माष्टमी॥ ट
जहांठाढेस्वरूप विराजत होई तहांतोश्रंगार
आभरणश्रीनाथजीकीरीतिसोकरनो जहां
श्रीनवनीतप्रियाजीकोस्वरूपविराजत होय वा
बालकृष्णजीविराजत होई तहांश्रीनवनीतप्रि
याजीकी रीतिसे सेवाश्रृंगार करनों अष्टमी
कोवड़ोबालभोग सेवके लडुवाको सेंनतांईआ
रोगे मंगलाआरती मोतीकी रूपेको दीवलाधरि
करनी आरतीकरिटेरादे ठाढेस्वरूप होइतो उ
नको पीताम्बर केशरी पेहेरावनो उपरणीकेशरी
दस्ताईकोउढायके चरणार विंदमे नूपुरश्री हस्त
मेकड़ा कंठमेलड़ १ मोतीकी कंदोरा कटीमेंआज
कार इतनो रहेनेजोश्रीनवनीतप्रियाजीकोस्वरूप
होइतोनके श्रीअंगमे आभरणकछुनरहे मंगला
आरती होइके टेरा न आवै चौरसा एक ठाकुरके
पाटआगे आड़ो राखीके ठाकुरके आभरण
वड़े करने बालकृष्णजी होइतो फेरछमानकेपी
ढापरपधारे मंगलभोगसराय आचमन मुख

वस्त्रकरायके पंचामृतनको साज सबधारिके अष्ट
दलपरातकेनीचे कोरीहरदीको पूरिके परातपर
कुमकुमको अष्टदलपूरिवापर दरियाई
दुहरीबिछायके फेर मंगलाआरतीकरिके फेरि

चोरसाआडोधरिके कठको लंडु तिलक पागवड़ी
करिके शंख घंटा झालर बाजते प्रभुको परातके

पीढापर पधरावने चोरसादूरि करनो दर्शनखु
ले फेरिमंदिरकी तिवारी मे हरदीको अष्टदल
चोकपूरनो तापर स्नानकीपरातधरनो तामेपी
ढास्नानकोधरनो पीढापर कुमकुमकोअष्टदल
करनो तापरलालदरयाईकोटूंक दुहरो करिके
बिछावनो तापर प्रभुनकोपधरावने झालरघंटा
शंखबाजत फेर दर्शनको टेरा चोरसाकोखोलनो
आपुने यहां तिलक करिके पाछे संकल्प करनो
यह रीतिहे पाछे तिलक कराय अक्षत प्रभुनको
लगाइये चरणारविंदमे तुलसीसमर्पिये

पाछे आचमनकरि प्राणायामकरी देशका
लसंकल्प भगवत: श्रीपुरुषोत्तमस्यजन्मो
त्सवं कर्तुं तदंगत्वेन पंचामृत स्नानमहं करिष्ये
यह संकल्पकरीये पाछे पंचामृतकेकटोरान

न. ३ मे तथा संखमे तुलसी डारिये फेरि तिलकके
अक्षत बड़े करीये फेर संख हाथमे लेइ दूस
रे जन होई सो द्रुधडारे तापाछे दहीसो तापा
छे घृतसो तापाछे बूरासो पाछे मधुसो तापाछे
फेर १ संख दूधसो तापाछे एक संख सीतलजल
सो पाछे टेरादेनो संख घंटा झालर बाजतनबं
धकरने फेरि प्रभुनको पीताम्बर पहरायो है सोब
ड़ोकरनो तथा अलंकार प्रभृति सब बड़े करने
फेर उष्णजलसो दूसरी परातमे प्रभुनको स्नान
करायनयो अंगवस्त्र करनों कुंकुमको छांटा
छेड़ानऊपर देनो अंगवस्त्र करि फेरि प्रभुन
को फुलेल समर्पनो फेर आंवला सर्व श्री अंग
मे समर्पने फेर उष्णजलसो स्नान करावनों
फेर प्रभुनको उबटना करिके एकले चंदनको सु
गंधमिलमा फेर केशर प्रभुनको श्री अंगमे स
मर्पनो पहले चरणारबिंदमे तापाछे सब श्री
अंगमे समर्पनो फेरि उष्णजलसो स्नानकराव
नो फेरि अंगवस्त्र नयो दूसरो करनो फेरि अ
तरसमर्पनो सब श्री अंगमे श्यामस्वरूप होइ तो
चोवा समर्पिकें पाछे अतर समर्पनो गौरस्वरूप

कोअेकलोई अंतरसमरपनो फेर ननीयांकेशरी
ठाढेस्वरूपको कुल्हेकेशरी ऊपर तुर्रा मांराककेश्री
गुसांईजीके सवरारे श्रीनवनीतप्रियाजीकेइहांर
हतहै अोर ग्रहस्तकीघांकेशरी तुर्रा तापररुपे
रीकिनारीलगीहोइतोधरावनो वागाकेशरीरुपेरी

किनारीको चाकदार श्रीमस्तकपरगोवाके सीसफू

ल लालमखमलीको त्रवल तुर्रा लाल हस्तीतोइ नलटक
नलाल अलकावलीलाल परवड़ाकी सीसफूल हो
राको अर्द्धचंद्र हीराको पांचचंद्रकाकोजोड़ सादा
कलंगी लाल मांराककी तापर चंद्रकाकोजोड़
रहे पांनन रहे जोड़ी इकेरी पुरानमांरीककी
पटका केशरी रुपेरी किनारीको स्थनलाल
अतलसकी ठाढेस्वरूपकूं श्रीनाथजीधरेहे
स्वांमिनीजी विराजत होइतो भीतरे वस्त्रस्र
तरूकसमल २ दोऊधरे साडीकेशरीधरेरु
पेरीकिनारीकी अोर ठाढे स्वरूपको अवका

स होइतो जोडी ३ नेहरीधरे हीराकी तथा
मांराककी तथा पन्नाकी अोर हू आभरण
सवतरहके धरे है अोर श्रीनवनीतप्रिया
जीतो मांराककी पुरानी जोड़ीधरे है अवल

न. तथा वघनखा न. हमेल न. हास न. कस्तूरीकी
४ मालाप्रभृतीनि सव धरे न. मकराकृत कुंडल धरे न.
नई गुंजा न. नई चंद्रकाको सादा जोड चंद्रका ५ को
धरे न. हीराके कमल पत्र कस्तूरीको धरनो गोर
स्यामको स्यामस्वरूपको केसरको करनो मुखव
स्त्रनयो न. सिज्याको साज सव नयो ओढिवेकी
चादर सिज्याकी १ केशरी न. पलनाकी ओढिवेकी
१ केशरी वाकी चादर तथा गिरदाकी खोल न. वा
लस्तको वस्त्र ये सव सुपेद नस्ये होई फुलकारीके
तकियाकी खोली न. खंड वस्त्रकी खोजीके किना
रे पर केशर अथवा कुमकुम लगावनो सिंघासनव
स्त्र तथा पिछवाई लाल मखमलकी कारचोवीकी र
हे ओर ठिकाने पीरे मखमलकी न. लालकी न.
नारंगीकी दरियाईकी तथा केशरीया यारीतसो रहे
फेर प्रभूनको सिंघासन पर पधरावनो तकीया ३
धरने खंड आगे मांडनो फेर भोजी हरदीको चोकसिं
घासनके चारो ओडी करनो फेर नई वंदनमाल वधा
वनी मंदिरके द्वारमे माला फूलकी पहेरावनी
फेरि दर्शनको टेरा खोलनो सो पेहेले तो आरसी
दिखावनी वेरागुवडी करनी फेर चूनके दीवडा तथा

* नवनीतप्रियाजी के यहां अष्टमी के तिलकसमे पीताम्बर नहीं ओढे रात्रकोजेन्मसमे पीताम्बर दोऊ स्वरूप ओढे सवेरेतोमथुरेशजी ओढेहै ४

मुठीया ४ चूनके करिके आरतीमोतीकीमेधारिके आर

तीमेवातीप्रगटकरिके फेर घंटा झालर शंखध्वनीहो

तप्रभुनकोतिलककीजे २ विरीयां फेर पीरे अक्षत

प्रभुनको दोइबेर लगाईये, फेर बीड़ामेकुमकुम लगा

इ बीड़ा ४ मेने बीड़ा २ तिलककेधरने बीड़ा २ श्री

जीके यहां जायहे सोप्रभुनपास गादीपरधरीये फेर

कुमकुमको सांथियाकरिके श्रीफल २ नाऊमर रु॰ २

धरिये सोगादीआगेधरने फेरि मुठीयावारि आरती

करनी फेरन्योछावरकरनी फेरि राईलोनकरनों फेर

शंख घंटाझालर आरतीभरे पाछे बंदकरने फेरिटेरा

दैनो फेरसिंगार होतमे जोथार नित्य थार आवेहे सोतो

आवे ओर दूसरो तिलककीथार जुदी आवे सोनि

त्यकीथारकेआगेरहे तामेजन्माष्टमीकी महाभोग

की सांमग्री सबधरनी थोड़ीथोड़ी नग १ न॰ २ ओ

रपजीरी नहीं आवे न॰ ओर हू नहीं एकलेपकवान

हीतिलककीथारमे आवेहे सिंगारभरे यहथार

श्रीगोपीवल्लभभोगमे भोग आवे सोभोगसरें

पाछे यह थार मंदिरमेहीरहे क्योंजोमहाभोगकी

सांमग्री सबयामे आवेहे ताते दूसरे दिनप्रसादीभं

डारमे ठले हांडीमे दूध ओटचो तामेबूरातथांघोरोत्ति

न- लगुड़ मिलायके सोनेकी कटोरी मे हांडी मेंसे लेके जुदो
५ धरनो ने हांडी मे तिलगुड़ मिलावने नही गोपीवल्ल
भभोग साथ आरोगेहै यही तिलककी हांडी गोपीव
ल्लभभोगमे आरवी पाटीया सेवकी धार आवे भात
कीधारके ठिकाने और जोनित्यभोग आवत होयसो
आवे। सरवड़ीमे राजभोगमे। धोईदार तीनकूंदा
न-पापड़ वड़ी न-सेव न-खीरि न-छाछके वड़ा गोपी
लवल्लभमे सामग्री फेनीकी आरोगे फेर राजभोग
आरती होय फेरी सांझको उत्थापन होय सोसेंन आ
रती रात्री घडी ६ न-७ गये होई पाछे टेरा देके फेर
खंड पाट चोपड़ सब मांड़िके सिज्यापास बंटा बीड़ाकी
नवकड़ी न-माला न-झारी धरीये सो सबेरे प्रसादीमे
सबनिकसे बंटासुद्धां यह रीतिहै पेड़ा विछायके फे
र दर्सन खुले सो जब जन्म समयमे घड़ी १ की ढी
ल होई तब साज सब उठावनो फेरि सिंघासनके आ
गे अष्टदल कोरी हरदीको करि तापर पराल मांड़ि पी
પીઢા પર પીતામ્બર નહીં टामांड़िके पीटापर अष्टदल कुमकुमको करि तिलक
केअक्षत बड़े कीजे फेरि दूसरो जन एक वाशंखमे
दूध न-दही न-घृत न-बूरा न-सहत या क्रमसो पं
चामृत स्नान प्रभुको कराईये एक संख दूधको फेर

पधराईये एकसंख शीतलजलकोपधराईये शं
खपड़घी परधरिके लालाजीकोहाथमेले चंदनसो
मसलिवाही परातमे उष्णजलसो स्नानकराय अंगव
स्त्रकरिवागावस्त्रधराय मुख्य प्रभुकीगादीपासजेव
नेश्रीहस्त आगेपधरावने फेरमुख्यप्रभुकोमा
लापहराय तिलकदोय वेरकरि प्रसन्नहोयवेरल
गाय पीताम्बर उढायकमलपत्रकरि पीताम्बरप
रकेशर मात्रछिरकके नो अपने यहां ओरमंदिर
मेंवसंतखेले अपने घरमेतो एकलीकेसरछिरकनी
तिलकके बीड़ा ६ (कामल) तापाछे पंचामृत जिनकूंकरायोहै
तिनको फूलकीमालापहरायतिलकअक्षतलगा
इ पीताम्बर उढाय वसंतखिलाय केशरछिरक
नी ओरकछूनहीं दोऊठोर चरणारविंदपरतु
लसीसमर्पि शंखघंटाझालरबाजतते राखीये
टेरादीजिये यासमयकी फूलकीमाला नवमी
केमंगलाभरे बड़ीहोय ओर पीताम्बर ओढ़ैहै
दूसरेदिन संध्याआरतीभरेपाछे बड़ोकरीये य
हरीत दंडवतकरि ठाकुरको सीतलभोगधरीये
फेरिझारीदोयभरिके पाटपेधरीये हांड़ीनहीधरी
येसीतलजलकीभरिके आचमन मुखवस्त्रकरा

न० ६

इके पंचामृत कीये है उन प्रभुनको जहां विराजत हो इ वा ठिकाने पधराय के मुख्य प्रभु को गादी महाभोग आरोगवे को भोग मंदिर मे पधराईये पाट पर पधराईये पाट के नीचे त० भोग की चोकी के नीचे भीजी हरदी को चोक पूरीये सखड़ी तथा अन सखड़ी को विधि ॥ प्रथम महाभोग की अनसखड़ी की सामग्री ॥ गुंजाको बूरा सेर ऽ४ बूरा भुजिवेको घृत ऽ४ मेदा सेर ऽ५ गुंजा भुजवेको घृत सेर ५ बूर मे नांखवेको छांनी खांड ऽ४ सेव के लडुवाको मेदा ऽ६ घृत ऽ६ खांड़ सेर ।ऽ२ मांटको मेदा ऽ८ घृत ऽ८ खांड़ ऽ८ सकरपाराको मेदा ऽ८ घृत ऽ८ खांड़ ऽ८ जलेबीको मेदा ऽ३ घृत ऽ३ खांड़ ऽ९ छूटी बूंदीको वेसन ।ऽ घृत ।ऽ खांड ।ऽ६ फेंनी सुपेत तथा केसरी ताको मेदा ऽ३ घृत ऽ३ खांड ऽ३ मेवाटीके लडुवाको मेदा ऽ१॥ घृत ऽ१॥ मिश्रीसेर ऽ१॥ मेवा ऽ१॥ पागिवेकी खांड़ ऽ३ मनोरके लडुवाको मेदा ऽ१ चोरीठा ऽ॥ घृत ऽ१॥ खांड ऽ६ वावर सुपेत तथा केशरी मेदा ऽ४ घृत ऽ४ भुरकायवेको बूरा ऽ४ केसर तो० १ इदरसाकी सामग्री चोरीठा ऽ१॥ घृत ऽ१॥ खसखस ऽ॥

खांड़ ऽ१।। मेदाकी पूरीकोमेदा ऽ१।। घृत ऽ।।। सो
राकाठा चूनको रवा ऽ१ घृत ऽ१ खांड़ ऽ१ चारो
ली ०।= येसबसांमग्रीमेतें छोटीसांमग्रीपलनांकी
सबकरनी याहीमेतें छोटीसांमग्रीपलनांके भोग
महाभोग मे आवे
मे आवे नथा नौमीकेदिन में राजभोगमें वेसन
मेवंरा नाई नित्यको बालभोग यामेतें आवे चिरो
जीके लडुवा चिरोंजी ऽ।। खांडसेर ऽ१ बीजके
बीज
लडुवा सेर ऽ।। खांड ऽ१ सिखरनबड़ी पिठी ऽ।
घृत ऽ। खांड़सेर ऽ१ सिखररागको दहीसेर ऽ२
यामेबूरा ऽ१ मीठेस्लोककी खांड ऽ१ बिलसारु
दोय तरहको ताकी खांड़ ऽ२ याहीमेतें नवमी
केराजभोग केलीरे थोड़ो राखनो पजीरीकोसा
मान सूंठसच्चुवासेर ऽ४ अजमायन ऽ। जीरा ऽ।
धाराा ऽ। सोफ ऽ।= बूरा चोगुनो ।।ऽ घृत ऽ।। रा
त्रिके जन्मको परागकीमिश्री ऽ।।। चपड़ी नथा
हाथकीसेव न-फरेराको न-फिरकनी नथांचो
खानीकरणी ताकोवेसनसेर ऽ२ घृत ऽ२
चणाकीदार ऽ।। भूजिवेको घृत ऽ। फड़फड़ी
या चणा ऽ।। घृत ऽ। साक नथां भुजेनात-चक
ना न-रायता महाभोगके भोगमे आवे

न- ७ दूधघरकी सांमिग्री महाभोगमे आवे तथा छोटी सामग्री
पलनाके भोगमे आवे ॥ खीरि दोय तरहकी दूध ऽ६
बूरा सेर ऽ१॥ बरफी दोय तरहकी दूध सेर ऽ५ बू
रा ऽ१। वासोंदी दोय तरहकी दूध ऽ५ बूरा ऽ१।
दूधके खोवाके मठाको दूध ऽ३ बूरा ऽ॥ मिश्री
कोरबा ऽ। मलाईको त- दूधपूरीको मिलिके दूध ऽ८
बूरा ऽ१ मीठे दहीके कूंडाको दूध ऽ२ बूरा ऽ। मो
गके सिखरनको दूध ऽ२ बूरा ऽ१ हांडी तथा मल
डाको दूध ऽ५ बूरा ऽ॥ जमायवेको दूध ऽ३६ या
दहीमेते सरवड़ी त- अनसरवड़ी दोऊ भोगको दही
त- सिखरन त- माखन त- छोक्यो दही सबयामेते
करनों नंदमहोत्सवको जमायवेको दूध सेर ॥ऽ४
अथ खंडकी मिठाईकी विगत ॥ मिठाई केशरी त-
सुपेत खांड़के पलनाके सावूनिके खांड ऽ१ गड़री
की खांड ऽ१ रेवडी तथा तिलपापडी मिलिके खांड़
ऽ१ तिनगिनीकी खांड़ ऽ१ गुलाबपाककी खांड़ ऽ॥
सेवत्तीपाककी खांड ऽ१ पेठापाककी खांड़ ऽ१ इला
यचीदाराकी खांड़ ऽ१ खोपरापाककी खांड़ ऽ१
वड़ी नग केसरमा १८ जुमले खांड ऽ९ रसखोरा
केवड़ी नग ८ ताको खमनके चासनीकी मिश्री सेर ऽ१

ताकी गोली नग २० बड़ी पलनाकी गोली नग ८

महाभोगको मांखन सेर ऽ॥ मिश्री ऽ॥ पलनांभोगमे
मांखन ऽ। मिश्रीपिसी ऽ। ॥मेवासूके तथा भुजेकी
विगत ।। बदामकी मिंगी ऽ।। तामेते ऽ। कागतीवाकी
कोरी आवे पिस्ताकी मिंगी ऽ।= तामेते दोआनाभर
लोंनमिरचकी भजनी वाकी कोरी आवे अखरोट
मिंगी ऽ। चिरोंजी पाव ऽ।= तामेते लोंनमिरचकी ऽ।
वाकी कोरी आवे चिलगोजा ऽ। खरबूजाके बीज
ऽ। लोंनमिरचके कोल्हाके बीज ऽ। लोंनमिरचके छु
हारे पाव ऽ। खोपरीकी वटी २ तामे टूक गोल गोल
करने मिश्री ऽ।। के गोलाके टूक करने किसमिस
द्राख ऽ। आंबको सीरा तथा मुरब्बा पलनांभोगमे
और तर मेवा। जितने भांतिके मिले तितने पलनांभो
गमें आवे ने-महाभोगमे आवे ॥ शाकसब तरहके
छोके तथा जेवारे ।। चकलाने-रायतो छ तरह
के बेगन तथा सकरकंद ये दोइ नहीं ॥ पंचामृत सवेरे
कोताकी विगत ।। दूधसेर ऽ१।। दही ऽ१।। घृत ऽ।।
बूरा ऽ।। सहत ऽ॥ रात्रीको जन्मसमयके पंचामृत
की विगत ।। दूध ऽ।।= दही ऽ।।= घृत ऽ= बूरा ऽ।
सहत ऽ= ।। अथ महाभोगकी सखड़ीकी विगत ।। थार

न· केचोरवाप्ररवी ऽ७ घोईदार ऽ२ मूंगकी ऽ२ मूंग

८ सेर ऽ२ घृत ऽ१ यारको तीनकूंडापत्रवड़ाकीक
ढीतथामिरचवड़ीतथांतिलवड़ीदेवरीतथासादादेव
री न·वेसनकीसेव न·भुजेना न·पत्तरवड़ीतथांसा
कभंजेनथवावे न·दीते न·मिरचके नथांकचरिया
सरवड़ीमेवेसन ऽ।। घृत ऽ३ साककोतेलमीठो ऽ४
भातपांच।। मेवाकेभातकेचोरवाप्ररबी ऽ।।। मिश्री ऽ।
मेवा ऽ।= बूरा ऽ३ केसरमांसा ६ सुगंधमासा ६ सि
रवरनभातकेचोरवाप्ररबीसेर ऽ।। तांमे सिरवरनको
बूरा ऽ३
दही ऽ१ रवट्टेभातकेचोरवा ऽ।।। नीबूनग ५० घृत ऽ।
वड़ीभातकेचोरवाप्ररवी ऽ।। घृत ऽ। लवंगनीवुकनी
तो·२ दहीभातकेचोरवा ऽ।।। दही ऽ३ आरवेच
रगा ऽ।। चरगाकीदार ऽ२ सेवसेर ऽ१। बूरा ऽ२।।
घृत ऽ।= पाछेधूपदीपकरि तुलसीसर्वत्रसमर्पि
संरवोदककरनो फेरिसमयभयरेभोगसरावनो आ
चमनमुरववस्त्रकरायप्रभुकोसिंघासनपेपधरा
य बीड़ी २ आरोगायके फेरिआरत्तीमोतीकीकरनी
दीवड़ा रूपेकोधरिके फेरपालनोमंदिरकीतिवारीके
बीचोबीचद्वारकेमध्यमेपालनोपधरावनो पलनां
केनीचेकोरीहरदीकोचोकप्ररनो आगेरिवलोनान

की नवकड़ीधरनी जेमनीआड़ीसामग्रीसब धोरी २ पा
लनेकीकरीहोय सोसबछावमेधरनी चोकीऊपर मे
वासको न-भुज्यो न-नरमेवोसबधरनो मांखन मि
श्रीमलाईकीबरनी पालनाभीतरधरनी तथामांख
नकीबररगी १ न-मिश्रीपिसीकीबररगी २ बगुलाब (कतरी)
पाककीकटोरी १ न-मेवाकीखीचड़ी सनोपालनां
केभीतरधरनो छावऊपर केशरीवस्त्रढांपनों बंड़ि
आोर पड़गीऊपर झारी १ रहे आोरबीड़ाकीनवकड़ी
तामेबीड़ानग २० रहे तामें १ कटोरी छोटीमेबरास
धरनों पलनामे गोदड़ी २ बिछावनी नाऊपरकेस
रीचादर बिछावनी न-ओढिवेकी केसरचादरधरनी
गिरदा २ ऊपर खोली केसरी न-बालस्तऊपर सुपेत
वस्त्रलपेटनों दुहरो आोरवंदन मालपालनेमेबांध (केवडा)
नी कमरबांधनी खिलोना नयेकाष्टके न-दांतकेधर
ने फेरप्रभुनको पालनेपधरावने फेरपीताम्बर (जसोदाजी पहले)
उढावनों फेरभेट रुपैया १) करनों फेर आारती
थारीकी करनी फेरस्त्रीजनडुलावैपालना आोर
पुरुष होइसो षष्टीपूजन करे षष्टीस्त्रीजनगाव
नलिखे पश्चिममुख षष्टीऊपर ३ बांसकीखपच्
खोस वापर पीरी हरदीकोवस्त्रधरनों पीठाबिछावनो

न. वापर पीरीविछावनी फेरषष्टीके आगे चनाकी दार
९ धरिके वापर चप्पन १ तांमे घृतभरिके दीवावाती २
कोप्रगट करि धरनो षष्टीके दक्षिरा और दीवाके नांई
और प्रसादी ठोर ६ नग एक छवडामे धरने तथा बी
डा २ प्रसादी धरने छठीपासभोगमे न.रई न.छडी
१ लाल न. उपाडी नरवा धरनो पीरे घरको धनी
होइसो वेठिके अपनो लोटीसो आचमन प्राणायांम
करिके पीरे अक्षत लेके संकल्प देशकालौसंकीर्त्य
अभिनवजातस्य श्रीमन्नंद राजकुमारस्य षष्टीका
देव्या पूजनं च करिष्ये इति संकल्प षष्टी ऊपर कुंम
कुंम अक्षत नारचने ॥ मंत्रः ॥ तदस्तु मित्रावरुणातद
ग्ने सैयो रस्मभ्यमिदमस्तु शस्तं अशीमही गादमुत्तः
प्रतिष्ठा नमो दिवे ब्रहते साधनाय १ गृहावेप्रति
ष्ठासूक्तं तत्प्रतिष्ठितत मयावाचासंस्तव्यं तस्मा
द्यद्यपिदूरई वपशु रन्तमत्ते गृहा नैवेना नाजिगमि
वात्ते गृहाहि पशुतां प्रतिष्ठा प्रतिष्टा आयाहि व
रदे देवि महाषष्टीति विश्रुते शक्तिभिः सह पुत्रंमे
रक्षजागर वासरे षष्ठिके देवि इहागछे इहात्तिष्ट
सुप्रतिष्ठित्ता वरदा भवेत्यावाहनम् वस्त्रे धूपेगं
धदीपे नैवेद्ये दक्षिरा दिभिः सह पुत्रंमे रक्षजागर

पोलिकाफेनिकाभिश्च प्रसन्नैश्च विशेषतः १ कृषरैः
पुष्पमालाभिः पुंगैस्ताबूलकैर्यजेत् षष्टिकादेव्यै
नमः आवाहनमासनं पाद्यं नैवेद्यं समस्त षोडशो
पचारान्परिकल्पयामि वसोपवित्रमंत्रेण वसो
र्धारां तुकारयेत घृतेन विषमावपः प्रथयेत्षष्टि
देवता: २॥ तथाच मंत्र॥ वसोः पवित्र मासिश
तधारं वसोः पवित्र मासिसहस्रधारम् देवस्त्वास
विता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुपुवा॥
अनेनमंत्रेण मुत्तरसंस्थावसोर्धारां कृत्वा नमस्कु
र्यात्॥ गौर्याः पुत्रो यथा स्कंदः शिशुत्वे रक्षितस्त्व
या तथाममाप्ययं वालो रक्ष्यतां षष्टिके नमः ॐ
षष्टिभद्रारिकायै सांगायै सपरिवारायै सायुधा
यै सवाहनायै नमः कार्तिकेय महावाहो गौरी हृ
दयनंदन कुमार रक्षभीतिभ्यः पाहि देव नमोस्तु
ते १ ततो मंथानं पूजयेत् मंथानस्त्वं हि गोलो
के देवदेवेन निर्मितः पूजितस्त्व विधानेन स्तेतीर
क्षां कुरुष्व मे २ मंथनाय नमः आवाहनादिषो
डशोपचारान्परिकल्पयामि ततखड्गं प्रार्थये
त् असिर्विशसनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः
पुत्रस्य विजयश्चैव धर्मपालन मोऽस्तुते ३

न. खड्गायनमः आवाहनादि षोडशोपचारान्परिकल्प
१० यामि ततो वंश पूजा सर्वमंगलमांगल्ये गोविंदस्य
करेस्थित वंशं वर्द्धय मेवंस सदानंदनमोऽस्तुते ४
रूपंदेहि जयंदेहि भाग्यंभगवतिदेहिमे पुत्रान्देहिध
नंदेहि भाग्यंभगवतिदेहिमे सर्वान्कामांश्चदेहिमे
५ अर्चितेत्यारार्तिकं तिलकं रक्षांचकारयित्वा
नसर्वत्र मितिमन्त्रांस्ततोपठेत् ।।इतिषष्ठीपूजा।।
पाछेवेश नंदरायजी न-यशोदाजी न-गोपी ध
न-ग्वाल ध सबनको स्नानकरावे वस्त्रपहराव
ने फेरपीढाऊपर यशोदाजीको बेठावने और श्री
नंदरायजीको पीढाऊपर बेठावने और गोपीग्वा
लनकोधरतीमे फेरिसबनके आगे अनसखड़ी
सामग्रीकीपात्तरधरनी सोसब थोड़ाथोड़ालेहि
फेरिहाथधुवाई बीड़ादेकरिके गावत वजावत
कीर्त्तनहोत दंडवत्करिके श्रीयशोदाजीकोपधरा
वने सो श्रीठाकुरजीके आगे खारवाकी नई गादी
बिछायतापर बेठावने और पीताम्बर उढा
वे रु-१) भेटकरे न-नारीयल १ फेरकीर्तन
करत श्रीनंदरायजीको दंडवतकरे हाथमेहा
थपकरिके छटीकेपास जाइके छटीके ऊपर

अप्रसननथां कुंमकुंम श्रीनंदरायजी सो नरववाइके
फेरि उहांही गोदांनको संकल्प कारे अभिनवजात
स्यनंदकुमारस्य अभ्युदयार्थं गोनिष्क्रयणं द
क्षणा न॰ ११ मनसा दीष्ट ब्राह्मणायदात्त महमु
त्स्टजेन संकल्पकरायके श्रीनंदरायजीकोमं
दिरमे पीढा बिछायके बेठावत फेरि गोपीनको
न॰ ग्वालनकोलावने गावत बजावत फेरि गोपी
नके हाथमे कांसेकी थारी एक सबनके नामें सुपा
रीनथा कुंमकुंम न॰ हरदी घोरी न॰ दूर्वा न॰ नारी
यल न॰ पावली एक एक थारीमे याभांति ४ था
रीचारयोनके हाथमेदेके पलनाविराजेहे ह्यांलेजा
इके नारीयर न॰ पावलीहे सो सब गोपीजन ठाकुर
के आगे भेट धरें तिबारीके बाहरने फेरि नंदराय
जीको सब गोपीनिलककरे पीठमें कुंमकुंमके
न॰ हरदीके थापादे न॰ छातीपरदे न॰ मांथेमेपा
घमे द्रवधरावे फेरि ग्वाल होइ मे सब श्रीनंदराय
जीको दक्षीपाग पर डारे न॰ मांखनडारे फेरमंदि
रके दोऊ ओर पांच पांच थापादे फेरनंदमहो
त्सवहोई नांचे नंदरायजीको लेके गोपीग्वाल न॰
घरके जे मनुष्य होय ते और नंदमहोत्सव करे औ

न- रीरगे आज नंदरायके आनंदभयो यहकीर्त्तनगावे
११ याभांतिकीर्त्तन ४ गायके फेरि मंगलमंगलंव्रज
भुविमंगलं यह गावे फेरि अंक पर्यंकसयनं यह
गावे घरके हूदुलावे और श्रीयशोदाजीबेठ
ठाकुरको झुलाइबोकरे फिर किनीचटकोवाउन
डुना आवे लोकोंविचारवे और मंदिरके चोकमें नं
दमहोत्सवहोई उहांदधिकादोउड़े दही न-हरदी
न-तेल न-चना थोरेस्सो डारि दधिकादोकरे सो
सवनऊपर नारवीये पाछे मोत्तीकी आरत्ती रूपेको
दीवड़ाधरिके करीये फेरिवस्त्रधारिके कीर्तनीया
कोदीजे न-न्योछावर रोकफरीये पालने झूलतमें
फेरि समयभयो जानिये जो आभानभयो तवमोती
को आरत्ती रूपेको दीवड़ा धरि आरत्तीमे पलनांफि
रवीये नहीं क्योंजो अपने घरमें तो सदैव पलनां
झूलत्त है याते पालनेकी आरती और त्तरहकी
मोत्तीकी करीये न्योछावर न्याराईलोनकरिके फे * ?
रिपालनेत्ते सिंघासनपर पधराईये और असीस
गाईये त्तिहारे घर सुवसवसो रंगीयह गावनी फे
रिदंडवत करि मंदिरमेंत्ते वाहिरनिकसीये मंगलभो
गधरिके झारीफेरिभरीये देहक्षत्यदंतधावनादिक

पुनः स्नानकरिके पालनेतेनिजमंदिर मेपधरावने क्योंजोवासीदेहते मंगलभोगधस्योनजाय औरअपरस ह्उत्सव कीहै रात्रिकीनंदमहोत्सवकीनाते औरपालनातिवारीमेते उठाय पालना घरमे पधरावनोभोग सवउठावनोबीड़ामालाअनेसबसाज उठायकेफेरि समयभरे जांति मंगलभोगसरायवीड़ा २ धरि आचमन मुखवस्त्र करायआरती मोतीकीआरती रूपेकोदीवड़ाधरिकीजे फेरिटेरादेइ गोवर्द्धनजीकोन-सालग्रामजीको छांनकराय ठाकुरकोफूलकीमालानईपहरावनी महाभोगकीमालावड़ीकरनी दर्शनखोलने आरसी दिखावनी टेरादेमंदिरवस्त्र करिगोपीवल्लभ भोगधरनो सेवकीथारको आरोपाटीया आरोगे झारीभरि दोऊधरीये फेरिसमय भरेभोग सराय आचमन मुखवस्त्रकराइ वीड़ा २ धरिकेनिजमंदिर गादी सिंघासनपरपधरावनी अपवापाट ऊपर पधरावनी झारी १ नयावीड़ा २ मुखवस्त्र सुद्धापाट परपधरावने फेरिअवकास होइतोतवकड़ी आरोगेनहोयतोदूधको उवरामात्र आरोगावनो मुखवस्त्र करिकें गादीपालनांमेपधरावनी पलनांभोगधरनो वीड़ा २ धरनेझारीधरनी

न. फेरभोगमंदिरमे गादीपधरावनी सरवड़ीनथाअनस

१२ रवड़ीभोगआवै पुरुषोत्तमस्तु नंदगहेजातस्तु नव

म्यां इतिवाक्यात् यहमांनिके महाभोगमेकोमीठो

भात प्रभृत्ति न- और भुजेना श्याकप्रभृत्ति पापड़ मठडी । न मठडी

वड़ीजोविगड़ेनहीं सोमहाभोगमेत्त थोरीथोरीरहेन

दीजै सोराजभोगमेधरीये भातनथापाईदार न- नी

नक्दायेसवनयेकरीयेभोगधरीये फेरसरवड़ीअ

नसरवड़ीमे महाभोगमेकी पच्चमेत्तसांमग्रीधरीयेसेव

केलडुबा न- माट न- गंज्ञा येतीन सांमग्रीरारवनी नित्य

वालभोगमे जित्तनेनगआरोगत होई उत्तनेरारवि आ

रवेदिनकोवालभोग मंगलात्तेलेके सेंनके बंटात्तांई नी

नसांमग्रीआरोगेभेली गोपालवहत्रममे उत्सवकीसां

मग्रीनहीधरीये संखोदक तुलसीसमर्पि धूपदीपक

रि किमाड़ मंगलकरि वाहिरआईये समयभरेभोग

सराय आचमनमुखवस्त्रकरायवीडीआरोगायठाकु

रकोगादीसुद्धां सिंघासनऊपरपधराईये फेरसाज

मांड़ि मालापहरायकरिफेरिभारेधरि आरसीदिखा

इ मोत्तीकीआरत्तीरूपेकोदीवड़ाधरिकरीये दंडवत्त

करि हाथखड़ीसोधोयपाछेआरसीदिखाईयेमाला

वड़ीकीजे टेरादीजै फेरिसैयाकोसाजसवमांड़िबंटाना

री तथावीड़ाकीतवकड़ी त-फूलकीमालायेसवधारि
पेड़ेगविछायपलनांपासधरीये अनोसरकरीये फेर
महाभोगधरिकेपंचामृत्त सवेरेकोतथांआधीरात्ते
कोदेऊड़काकेकरिकेतीजै जोमुखोतबीररघोजाय
तोफेरमहाभोगसरे आरतीभरे कछूअनसखड़ीनी
रघोजाइनो दूसरेदिनपंचामृतलेकेप्रसादलेनो जयं
तीव्रतहै आपप्रसादलीजै (समयभरे शंखनादक
राईये) तथापंचामृतकोजोपीताम्बरहै ताकेटूंकक
तरिके आपलीजे घरकेनकोदीजे फेरप्रसादलीजे
समयभरेशंखनादकरायके फेरक्रमतेउत्थापन त-
भोगकेदर्शन त-संध्याआरतीकेदर्शन फेरिनित्यकी
रीत्ति सोसेंनपर्यन्तकरनों दूसरेदिनश्रृंगारजन्माष्ट
मीकोही प्रभूजीधरे यहरीतिहै फेरिछोटेस्वरूपनित्य
टोपीधरे सोसप्तमीतांईधरे ॥इतिश्रीजन्माष्टमीको
विधिसमाप्तं॥भादोवदी॥१४॥ श्रीकेतश्रीविठ्ठलराय
जीकेछोटेलालजीविट्ठलभजीकोउत्सव॥ वस्त्रपीरीचूं
नरीके अथवानीवूआरंगकेधरे श्रीमस्तकपेटि
पारो अथवा कुलहीसुनहरूवाजड़ाऊआभरनही
रापन्नाके सगरेदिनकोबालभोगतथांगोपालव
ल्लभमयाहीमेंते जलेबीकोमेदासेर ऽ२ घृत ऽ२

न-
२३ खांड ऽ६ बूंदीकोबेसनसेर ऽ२ घृत ऽ२ खांड़पागिवेकी ऽ२ हांडीकोदूध ऽ२॥ खांड़ सेर ऽ॥ गोपालवल्लभमें जलेबी सगरेदिनकोबालभोगसुद्धां मेदा ऽ२ घृत ऽ२ खांड़ ऽ६ बूंदीकोबेसन ऽ१ घृत ऽ१ खांड़ ऽ१॥ हांड़ीकोदूध ऽ२॥ बूरा ऽ॥ मीठेशाककीखांड़ ऽ॥ छाछके वड़ाकीपिठीपाव ऽ। घृत ऽ= सखड़ीमें अरुपाटीया सेवको श्रीमहाप्रभूजीनीपजगड़ीसो घृत ऽ॥ बूरा ऽ१॥ धोईदार तीनकूटा पापड़ वड़ी इतनो अधिककीमें॥ बाकीनित्यकीरीति॥ अबभादोसुदी॥ ८॥

राधाष्टमीको उत्सव॥ अभ्यंग न- केशरीवस्त्रकुलहो न- बागा सूथन लाल दरयाईके पटका लालसू नरूकिनारी लगी श्रीस्वांमिनीजी विराजत होइतोश्रृंगार बड़ोकरि टीकीकरि अक्षत लगाइ बीड़ा २ धरि दूधसो स्नान कराईये फेरि अभ्यंग कराईये अत्तरसमर्पि केशरीसाड़ी किनारीदार दोऊवस्त्र लालसूतरू श्रृंगारभारी हीरासारकेआभरण जोड़ीदुहरी पहरे हांस न- चोटीप्रमाणवधनखा सवधरे कस्तूरीकीमालाधरे औरराजभोगमें स्वांमिनीजीकीथार १ मातकीजुदीआवै तथाघीकोडबरीयाआवे और भोगसबठाकुरकेभेलोईआवे गोपीवल्लभकीसखड़ी

कोनेगकादिलेनोनही आजकेदिन श्रीनवनीत
प्रियाजी कमलपत्रकस्तूरीकोधरे गौरस्वरूप
श्यामस्वरूपकेशरको कमलपत्र अंगारभरे पाछे
गोपीवल्लभमने आवे पाटीया सेवकीथार आरोगे
औरनित्य आवेसोभोगसरयग्वालकोनवकडी
आरोगाय पालनेपधरायके फेरभोगमंदिरमेंगादी
पधरायीये जोश्रीस्वांमिनीजी प्रत्यक्षविराजत्तहो
ई तवत्तो राजभोग आरोगे पाछेसिंघासन ऊपरपधा
रिके ठाकुरकोतिलकहोई और टेराकरिके श्री
स्वांमिनीजीकोटीकीकरीये फूलकीमालादेके
ठोरधराय बीड़ादोयठोरधरिके श्रीफल २ न-रोक
डा रु- २) धरिके फेरटेरा खोलिवेनुवेत्रधरे आरसी
दिखाइ मोत्तीकीआरत्तीचंदनकोदीवड़ाधरे मुठीया
वारिकरीये और प्रत्यक्ष स्वांमिनीजीनहींविरा
जत्त होइत्तो ठाकुरकेपाट ऊपर बांई ओरमखमल
कोगदेलाबिछायपीठककोमकीयाधरिसाड़ीकेस
रीकिनारी लगीभई रुपेरी न-लेहेंगासाड़ीचुनगादी
परधरीये और चोलीलाल अत्तलसकीसुनेरी
छापाकीधरिमालापहराय हारधरायटीकीधरा
वनी फेरदंडवत्त करिके भावनासो श्रीस्वांमिनीजी

न.
२४
कोपधरावने आरसीतथांअरगजाकीवरगी १ न. पं
खा न. झरीवांई और श्रीस्वामिनीजी केधरनी टीकी
करि प्रक्षन्नलगावने भावनासोपधरावनी तहांफेर
राजभोगधरनो थार दूसरीनहीआवेभात्तकी श्री
ठाकुरजीकोथारमेहीआरोगे समयभरेभोगसरा
य आचमनमुखवस्त्र कराय स्वामिनीजीको बीड़ी
१ आरोगावनी बीड़ा २ धरने फेरदंडवत्तकरिछा
वमेपधराय सैयामंदिरमेछावरहे संध्याआरत्ती
भरेमंदिरमे साड़ीचोलीलेहेगा लेहेगाकिरमजी
खीनरवापको नाड़ा उदेरंगको झाबीजड़ाऊवा श्री
जीकेयहां थारसरवड़ीकी दूसरीनहीआवेहे श्री
नवनीत्तप्रियाजीकेहां स्वामिनीजीकी भात्तकीथा
र दूसरीआवेहे न. घीकोडबरा औरसबभेलोई
आवेहे ॥सामग्रीकीविगत्त सरवड़ी न. अनसरवड़ी
को न. दूधघरको ॥ बड़ेबालभोगबूंदीकेलडुवा
को बेसन ऽ३ घृत ऽ३ खाडसेर ऽ६ मेवा ऽ।
मिश्रीकोरवा ऽ= फेंणी केसरीतथांसुपेत्त मेदाऽ३
घृत ऽ३ खांड ऽ२॥ केसर मासा ४ बूंदीछुटमा
बेसन ऽ२ घृत ऽ२ खांड़कोरस ऽ२॥ सकरपारा
कीमेदा ऽ२ घृत ऽ२ खांड़ ऽ२ मठड़ीकोमेदा ऽ२

घृत ऽ२ खांड ऽ २ पजीरीके लडुवा सोंठ ऽ॥= अजवायन ऽ- जीरा नो- २ सोफ नो- २ धनिया नो- २ घृत ऽ१ खांड़ ऽ २॥ मीठे शाक की खांड सेर ऽ॥ सिखरन बड़े सिखवा पिट्ठी ऽ। घृत ऽ। खांड ऽ१ दही ऽ१॥ बूरा ऽ२॥ चिनसार खांड ऽ॥ छाछके बड़ा पिट्ठी ऽ॥ घृत ऽ। छाछको दूध ऽ२॥ बेसन ऽ॥ चकताको॥ अथ दूधघरकी सामग्री॥ बरफी केशरी दूध ऽ२ बूरा ऽ॥ केशर मासा ३ पेड़ा सुपेत दूध ऽ२ बूरा ऽ॥ सुगंध मासा ३ बासोंदी दूध ऽ३ बूरा ऽ॥। सुगंध मासा ३ हांड़ी नया मलड़ा को दूध ऽ५ बूरा ऽ॥। दूधप्रीनयामलाईको दूध ऽ६ प्रीनग १६ मलाईकी कटोरीमे बूरा ऽ॥ मीठे कूंदाको दूध ऽ१॥ बूरा ऽ। मांखन ऽ= मिश्री ऽ= पाटीयामेवा मिठाईकी थालनाकी सामग्री १० रेवड़ी साबुनी सठेली रोटी [illegible] गुलाबपाक खांडकी खोपरापाक धमधान पगीबदाम मिल के खांड़ सेर २ इलचीसेव सेर ऽ१॥= बूरा ऽ३॥ घृत ऽ।= राजभोग सुद्दां॥ अथ सरवड़ीकी यार॥ गोपीवल्लभमें सेव सेर १॥ घृत ०।= बूरा ऽ३ सिखरन भात प्रख बीचोरवा जन्माष्टमीको रहेहै सो फेर एकाद

न॰ सेर ऽ।। दही ऽ२।। अरासेर ऽ२।। दहीभातसाठीचो
२५ रवा ऽ।। दही ऽ२ खट्टोभातकेचोरवा ऽ।। घृत ऽ=
नीबूनग २५ वडीभातकेचोरवा घूरवी ऽ।।

मेवाभातके चोरवा ऽ।। मेवासेर ऽ। मि
श्री ऽ= बतासेर २ केसरमासा १ घोईदार ऽ मूं
ग तीनकूटावडी पापड वेसन ऽ।। तेल ऽ२ नयां
चनातीनकूटामेनांरवनेअधिकीमे

सधाना दारव ऽ= कारीमिरच ऽ= पीपर ऽ=
छुवारा ऽ=।। इनसवनकोजुदेजुदे मांटीके वासनमेधरि
केइनमेहरदीनयां लोनभुरकायके नीवकोरसनिचोड
नो।। अन सखड़ी न॰ सखड़ी सवठाकुरकीथालकेभेले
हीआवे एकभातकीथार न॰ घीकोडवरा स्वांमिनी
जीकेआगेजुदाआवे अवजगोपीवल्लभकीसख
ड़ीकोभारकाटतोनही खीर न॰ राइता २ नरहूको
औरजोनित्यआवतीहोइसोआवे फेरदोऊठोरफू
लकीमालापहरावे औरगजाछीड़कीरेपाटीया
केनीचे हरदीकोचोकपूरिरूपेकीथारमेआरतीमो
तीकीकुमकुंमसोरंगिचनकोदीवड़ा न॰ मुठीया ४ धरि
भीतर कुंमकुंम सोंउनमे तिलककेलीरेधरिअक्षतपी
रेधरिआरतीप्रगटिकेफेरिघंटाझालरिशंखवाजत

श्रीप्रभुनकोमालाफूलकीदोयदोयपहरायकेतिल
कदोइवेरकरे अप्रसन दोइवारलगाइकेबीडा २ कुंम
कुंमलगाइके गादीपरधरिकेफेरीस्वांमिनीजीकोति
लक टीकी दोइ वेर करि अप्रसन दोइवेर लगाई बीड़ाकु
मकुंमलगाइकेदोऊठोरवायधरीये नारीयल २को
सांथिया करिकें रुपैया ३ ऊपरधरिके नारीयरभेट
श्रीस्वांमिनीजीके आगेधरीये फेरे मुठीया ४ वारि
आरती करीये हाथधोई थार सानिये फेर तुलसी
संखोदिक करि धूपदीपकरि टेरादै बाहिर आईये फेर
समयभरेभोगसराय दोऊ ठोर आचमन मुखवस्त्र
कराय बीड़ी दोऊठोर जुदी २ आरोगायके बीड़ा २
श्रीस्वांमिनीजीकेधरिके फेरिन्योछावरराईलोंनदो
ऊस्वरूपन ऊपरकरिकें दंडवत करिकें ठाकुरकीगादी
सिंघासन ऊपरपधरायफेरिसाजसबमांड़िये माला
पहराईये औरभावना करिके श्रीस्वांमिनीजीकोप
हरावेहै तिनको दंडवत करिके एकछाबमेबीड़ा ४
न-माला न-नारीयल २ नयां रु-२) न-साड़ीचोली
न-आरसी न-वररागी अरगजाकी सोसवछाबमें
धरि यहछाबासिज्यामंदिरमे सिज्याकीजेमनी आड़ी
एकचोरवटाऊपरधरनी उत्थापनभरेपाछेसाडीन-

न- चोलोघड़ीकरिकेमरदाजीमेधरनी ओरपिछवाईचंदो
२६ वान- सैयाकोसाजयेसब जन्माष्टमीकोरहहे सोफेर
एकादशीकोसुपेदीचढेहे दसमीकेदिनहूयहीश्रृंगा
रहोइहे साजमांडिमोतीकोराजभोगआरतीकरनी
अनोसरकरनोउत्थापनतेजिमकोरीति ॥ इतिराधा
ष्टमीकीविधसंपूरण ॥ भादोसुदी ॥ ९ ॥ हीराकोमुक
ट प्राचीन श्रीगसांईजीको समरायोभयोधरेहे श्रीनाथ
जीत्रयांश्रीनवनीतप्रीयाजी मांगाककी चुनीकोगोल
घाटको श्रीगसांईजीको समरायोभयोधरे गोपालवस्त्र
भमेसेवकेलडुवा मेदा ऽ॥ घृत ऽ॥ खांड़ ऽ२॥ मिश्री
कोरवा ऽ=॥ भादोसुदी ॥ ११ ॥ दानएकादशी ॥ तथा
वामनद्वादसीभेलेहेगइतोसांझकोश्रृंगारवड़ोथाय
त्यारेकुल्हेधरे एकादशीकेदिन मुकटकाछनी
कोश्रृंगार लालचूनड़ीके लालपीताम्बर डंककेत-
हीराकोमुकट गोपीवस्त्रभमेदहीकीहांडी १
आरोगे ओरगोपालवल्लभमेसेवकेलडुवा
कोमेदाचोरीठामिलिके ऽ॥ घृत ऽ॥ खांड़ ऽ२
मीठेशाककीखांड ऽ॥ दूधआधिकीमे ऽ२ बूरा
ऽ। हांडीकोदूध ऽ २ तामेसो फीकीमीठीसेव ऽ॥=
बूरा ऽ। दहीकीहांडीकोदूध ऽ २ तामेसोफीकीमीठी

२ करनी सेवसेर ऽ॥= बूरा ऽ१। घृत ऽ।= औरकछून
ही कदाचने वांमनजीऔरदंनएकादसीएकठीहोय
नवमुकटकाछनीकेशरीधरें न-पीताम्बरकेशरीध
रे यहरीतिहैवाकीनित्यकीरीतिहै भा सु १२
वामनद्वादसीकोउत्सव एकादशीकोविध्नुश्रृंखल
होइ नकोदोउउत्सवइकट्ठेहेंई औरविध्नुश्रृंखल
नहोइतोजुदेउत्सवप्रमाणदेखिकेकरनो अभ्यंग
केशरीधोत्ती उपरना न-केशरीकुल्लही रुपेरीकिना
रीलगीकेसरीसाड़ीसूतरूभीत्तरवस्त्रश्रीस्वांमिनीजी
केलालआभरनहीराके त्तथांमोराकके गोपालवल्लभ
भमेरवोवाकेगंजाकोदूध ऽ५ मेदा ऽ॥। घृत ऽ॥। रवोवा
मिलाइवेको बूरा सेर ऽ१। गंजापागिवेकीखांड़ ऽ॥
सुगंध मासा २ मीठेसाककीखांड़सेर ऽ॥ पगाकी
खांड़ सेर ऽ॥ पगाकीमिश्री ऽ। खीरिकोदूध ऽ२
अधकोमिबूरा ऽ।= हंडीकोदूध ऽ२ बूरा ऽ। गोपी
वल्लभमेंआरवोपाटीयासेवकोमेदा ऽ१घृत। बूरा
सेर ऽ२॥ सुगंधी धोईदारनीनकूंदावड़ीपापड़ ने
लवड़ी टेवरी उत्सवकेभोगमेंदहीभातचोरवासेर ऽ॥
दही ऽ१॥ सधानाकीकटोरीमेनींबू आदा टेंटी को
न-पनाआवे राजभोगसरेपाछेसिंघासनकेआगे

न- २७

अष्टदलकरि तापर परात मांड़ि परातमे पीढापर कुंम
कुंमको अष्टदल करनों पंचामृतके साजवांमओर
परातबिछायधरनो स्नानकोलोटाधरि मंदिरकेकिंवा
ड़ दर्सनकेखोलि प्रभुसो आज्ञामांगि सालिगरामजी
कोपीढापरपधराय शंख झालर घंटा बाजत आचमन
प्राणायामकरि देसकालो संकीर्त्य अक्षतजलह
स्तमेलेके संकल्पकरनो भगवतः श्रीपुरुषोत्तमस्य
वामनः प्रादुर्भावोत्सवं कर्तुं तदंगत्वेन पंचामृतस्नान
कारयिष्ये यह संकल्पकरि अक्षोतजल छोड़िये
हाथधोयकेतिलककीजे पीढाऊपर बिराजेहैतिन
कोतिलक देरकेर अक्षत लगाईये महामंत्रसोतुल
सीसमर्पि संखमे त- पंचामृतके कटोरानमेंजलसो
डारिये फेरकीर्तनहोई शंख घंटा झालर बाजत
पंचामृत स्नान कराईये प्रथम दूधसो फेरदहिंसो
फेर घृतसो फेर बूरासो फेरिसहतसो फेरिएकसं
खदूधको फेरिएक अंगीठीखस शीतलजलकोफे
रिचंदनसो मसालिवाईसे स्नानकराय अंगवस्त्र
करि प्रभुकोगादीपास दक्षरग ओरपधराईये फे
रिमुख्याकी प्रभुको फूलकोमाला पहरायके फेरजि
नको पंचामृतस्नानभयोहे उनकोतिलक करनो

સં કા ૧૧૫ પહેલો ?

अक्षतलगावने फूलकीमालापहरावनी पीताम्बरज
न्माष्टमीकेदिनको उनको उढावनो तुलसीदोऊठोरस
मर्पनीचरणारविंदपर फेर टेरा आवै दर्सनवंदकरने
संखघंटाझालरबाजत्तेबंद करते फेरिमंदिरवस्त्रक
रिचोकीमांड़िधूपदीपकरीके रवकपड़मी ऊपरढ़ी
भान साठीचोरवा २।। दही ६१ इवामेंराक्क
टेरीकरिकेसधानाकीनामें नीबूको न॰ टेटीको नं॰ आ
दाको न॰ केरीको सुद्धांकरनो याभांतिसधानापना
मिश्रीको न॰ फलाहर सब आवै तुलसीसरवड़ीमे
नथां अनसरवड़ीमे समर्पिके फलाहरमेनही फेरि
संखोदिककरिटेरादेई झारीभरिनालवा खोलिके
बाहिर आइये फेरिसमय्यभरेभोगसराय आचमन
मुखवस्त्रकराई बीड़ा २ अधिकीधराय पीछेसा
जसबमांड़ि टेरा दर्सनकोखोलिये फेरि आरती
मोतीकी तामे रूपेकीदीवलाधरिकीजे आरसीदि
खाईये मालातोअसलकीहै सोउत्थापनकेसमें
बड़ीहोय और अधिकीकेबीड़ा २ धरेहै सोहउ
त्थापनमे बंटासाधानिकसे और जे पंचामृतकीने
है तिनकोभोगसरे जहाविराजतहोई ताठिकांने
पधरावने ।।इतिविधिसमाप्तं।। आस्वनवदी ६।।

न.
१८ कोउत्सव माजीको अपने यहां नहीं मानेहै इनकेय
हांमानेहै रजनिराहार सबेयां करनो नरसोजायत
व फलाहर करनो जन्माष्टमी त्ते लेके दांन एकादशी
तांई मुकट धरें नही और ठाढे स्वरूप होय सोतो
मस्तक ऊपर पाग प्रभृति धरावे और बालकृष्ण
जीके स्वरूपको तो टोपीको शृंगार ही होई भादे सुदी
७ तांई यह रीतिहै और मोतीकी आरती भादो
सुदी १३ ने सांझीकी आरती मोतीकी होय तादिन
दादा श्रीगिरधरजीको उत्सव गोपालवल्लभमे
जलेबी वस्त्र केसरी अथवा नीवत्रा मस्तकपर दु
मालो मेदा ऽ।।। घृत ऽ।।। खांड सेर ऽ३ सुगंध
श्रीगुसांईजीके बड़े भाई श्रीगोपीनाथजीको उत्सव
आस्वन वद १२ को हांडी मलड़ा आरोगे वस्त्र नी
वत्रा ।। आस्वन वद ।।४।। श्रीदादाजी महाराज
को उत्सव आस्विन वद [illegible] को बारा ब्रदीके लडुवान
को वस्त्र केसरी न-मालाजोड़ो हीराकी न-मारगक
की श्रीमस्तकपे कुल्हे ही जड़ावकी अथवा वस्त्रकी
आस्वनवदी श्रीगोपीनाथजीके लालजी श्रीपुरु
षोत्तमजीको उत्सव हांडी मलड़ा आरोगे। आस्वन
वदी।।६।। श्रीगुसांईजीके लालजी श्रीबालकृष्णजी।

नात्तजीश्रीवल्लभजीकेनांत्तीश्रीविट्ठलेशजीत्तात्तजी
कोउत्सवगोपालवल्लभमेमनोहरकेलडुवाकोमेदात-
चोरिठा ऽ॥ घृत ऽ॥ खांड़ ऽ२॥ आस्वनवदी॥ १३॥
श्रीगुसांईजीकेलालजीश्रीतालकृष्णजीकोउत्सव
हांडीजथामलडुवाकोदूध ऽ४ बूरा ऽ॥ सुगंधमासा४
नादिनवस्त्रकेसरीधरे॥ आस्वनवदी॥ १४॥ कोसवा
रेराजभोगकीआरती नोचंदाकीहोय॥ औरसेंनकीआ
रतीकोटकीहोइहे॥ आस्वनवदमेपित्रपक्षमेश्राद्धआ
वैताकीविधि॥ गोपालवल्लभमेमठड़ीकोमेदा ऽ२ घृ
त ऽ२ खांड़ ऽ३ लुचईकोमेदा ऽ२ घृत ऽ२ बूरा ऽ॥
उर्दकेपिठी ऽ१ घृत ऽ॥ मुंगोड़ा॥ पिठी ऽ। घृत ऽ=
खीरको दूध ऽ४ आधिकीमेबूरा ऽ॥ इत्तनोनेगको
लुचईकोसामान देनो॥ खड़ीमेचोरखा ऽ१ आधिकी
मे चोरीठाको तीनकूटा और सब नित्यको॥ आश्व
नशुक्ला॥ १॥ यहांतेनवरात्तकोपर्व नादिनसोवेग
उठनो अभ्यंग वागालालछापाको न-कारचो
वीको होसुनेरीछापाकेधरें फेरनियमनहींहे क
समल न-चूनड़ी न-जहेरीया प्रभृत्तिधरें छापाको
नियमनाहींहे खलेवंदकोवागाधरे सयनहुरे
छापाकी कुलहकसमलभीतर चित्र सुनेरी कीतुरा

न- २९

सुनेरी किनारी लगे भरे छापाकी पेहेरे नहीं तनियां कसु
मज श्रीस्वामिनीजी की साड़ी लाल छापाकी सुनेरी भी
तर देऊ वस्त्र हरे सूतरु श्रीबालकृष्णजी को साज ला
ल सुनेरी छापाको पादुकाजी को लाल छापाकी ओट
नी सुनेरी सिंघासन खंडपाट चोकी न- पिछवाई सिंघास
न साज कशमल सुनेरी छापाको रहे और आभरण
हीराके पहरावे और पेहेले पर्व तें लेके सुद ८ तांई
खुले बंद को बागा पहरे ठाढे स्वरूप होय तो खुले बंद के
बागा के भीतर कछु धोती हू रंगीन पहरे है मस्तक मे
रुमाल तो न- पगा न- पाग प्रभृति शृंगार सब और होइ
है परंतु श्री मस्तक पे ये दस दिन मे मुकट को शृंगार
न होय और सेवको पाटीया गोपीवल्लभ मे प्रथम
पर्व को सो नित्य राजभोग मे थोड़ी थोड़ी रख आयबो।
करें नवरात्री मे धोवादार जा दिन न होय ता दिन बीच
मे किनारीदार सुरखी मे न्यारे राग बागाकी कवहू संगकी
कवहू तरपर की कवहू कछु नवटी नवरात्रि को आरु
न द ।। १ ।। गोपालवल्लभ मे मनोरके लडुवा मेदा
तथा चोरीठा ऽ।।। घृत ऽ।।। खांड ऽ२ सुगंधी मां
ग २ मीठा ककरी खांड ऽ।। छाछ के वड़ा की पिठी
ऽ। घृत ऽ= हांडी तथा भजड़ा को दूध ऽ४ बूरा ऽ।। मोन

कूदा तथा पापड़ वड़ी इत्तनो आधिकीमे अनसरवड़ीमे
छाछिकेवड़ा। त-खीरि राइता जवारगघड़वाकेदिन
उगावने॥ औरनित्यगोपालवल्लभसुदेसुदेआरोगे
लुचईकेठिकाने। नवरात्रीतक इवागावने। नवमी
केदिनमंदिरधोयचनोसुपेनीकरोये॥ आसोजसुदी
२॥ गोपालवल्लभमेसिरवेटी मेदा ऽ॥ घृत ऽ॥ बूरा
ऽ१॥ सुगंधमासा २ सरवड़ीमेखड़रा बेसर ऽ॥ घृत
ऽ॥ खांड ऽ॥= सेव ऽ। घृत ऽ= बूरा ऽ॥ आस्वनसुद
३॥ गोपालवल्लभमेबूंदीकेलडुवा बेसन ऽ॥ घृतऽ॥
खांड ऽ १॥ मिश्री ऽ= द्राख ऽ= सुगंधमासा ४ राजभो
गमेसेव ऽ। घृत ऽ- बूरा ऽ। आसोजसुद॥४॥ टीकेतश्री
दामोदरजीकोजन्मदिन॥ गोपालवल्लभमेबावर मेदा
ऽ॥। घृत ऽ॥। बूरा ऽ॥। सुगंधमासा २ राजभोगमेसे
व ऽ। घृत ऽ= बूरा ऽ। ॥ आस्वनसुद॥ ५॥ गोपालवल्ल
भमेगुड़पापड़ी मेदा ऽ॥ घृत ऽ॥ खांड ऽ१॥ सेव ऽ।
घृत ऽ= बूरा ऽ। आसोजसुद॥६॥ गोपालवल्लभ
मेदूधपुवा दूध ऽ२ मेदा ऽ॥ बूरा ऽ१ सेव ऽ॥ बूरा
ऽ॥ घृत ऽ= आसोजसुद॥ ७॥ गोपालवल्लभमेपप
चीकीसांकली मेदा ऽ॥। घृत ऽ॥। खांड ऽ२। सेव ऽ।
घृत ऽ= बूरा ऽ॥ आस्वनसुदी॥ ८॥ गोपालवल्लभ

न. २०

मेदहीकोमनोहर मेदा-चोरीठामिजिके ऽ।।। घृत ऽ।।।
खाड़ ऽ२। सुगंध २ मिश्रीआना २ चिरोंजी ऽ - दहीमे
दूध ऽ१ सेव ऽ।। बूरा ऽ।। घृत ऽ - आसोजसुद। ६
गोपालवल्लभमे दहीथरा मेदा ऽ।।। घृत ऽ।।। खां
ड़ ऽ। सेव ऽ। बूरा ऽ। घृत ऽ - आसोजसुदी
१०। दसहरा तथा बड़ेश्रीगुसांईजीघरजीकोउत्सव ।।
मंगलाकेसमे जरीकोउपररागआोटे सिज्याऊपर
जरीकीखोलरहे दसहराकेदिन अभ्यंग घेरदार
वागा स्वेत नमामीजरीको अथवा कारचोवीको मस्त
कपर चीरा स्वेतजरीको वागाकी चोलीमे मलमलकी
स्वेत अजावीजोड़ नीसरयनलाल न-पटुकालाल तनि
यां स्वेत श्रीस्वामिनीजीकोसाड़ीस्वेतजरीकीके कार
चोबीकी जरीकीभीतरदोऊवस्त्रकसंमल छापाके
श्रीबालकृष्णजीकेचीरा सुपेद जरीको अथवा
कारचोवीको वागा स्वेत जरीको अथवाकारचोवीको
जरीकी ओटनी स्वेत जरीको अथवाकारचोवीकीज
रीकी पादुकाजीको ओटनी जरीकी अथवाकारचोबी
जरीकीधरे आभरण मंगलाक हीराकेधरे।।गोपाल
वल्लभमेखोवाकेगूंजा।। खोवाकेगूंजाकोदूध ऽ४ मे
दा ऽ।।। घृत ऽ।।। बूरा ऽ१ पागिबेकोखांड़ ऽ।। आं

घमांसा २ खीरिकोदूध अधिकीमे ऽ२ बूरासे ऽ॥

वड़ाकीपिछी ऽ॥ घृत ऽ। मीठेसाककीखांड ऽ॥ बूंदी

छटवाकोवेसन ऽ॥ घृत ऽ॥ खांड ऽ॥ सकरपाराकोमे

दा ऽ॥ घृत ऽ॥ खांड ऽ॥ दांदीमलइाकेदूध ऽ४ बूरा

ऽ॥ सखड़ीमेंधोवादार मीनकूंदपापड़ न वड़ेमीठा

नेल ऽ॥ ढाक के वड़ा रहता गोपीवल्लभमें सेवको

पाटीया सेवकोमेदा ऽ१। घृत ऽ। बूरा ऽ२॥ वड़ोवा

लभोग मे सेवके लडुवाकोमेदा ऽ३ घृत ऽ३ खांड ऽ६

जवाराकी सांमग्री॥ मांटकोमेदा ऽ१० घृत सेर

15 खांड ऽ५ नाकेनग २० करने वड़े छोटेनग

२० सघानाकीकटोरी १ आवे और आरतीपाछे

नित्यकीरीति दसहरात्ते ठेरमे तिलपड़े सोदुती

यापाटतांई उत्थापन वेग होई भोगके दर्सन खुले

समयभरे पाटचोकीउठाय खंडरहेनदेनो ओरज

वारा सवारेके कलंगी रेसमसुं बांधनी पेरसंर बोदि

ककरि जवाराको धारतूपकीमे आरतीमे कुमकुम

कोअष्टदलकरि भीत्तरचनके दीवड़ाकोकुंमकुंम

लगाइके मठीया ४ कुमकुमलगाय कुमकुमतिल

कके जीरे गलाबजलसोसांनि अक्षत्तधीरेधरिके आ

रतीप्रगटि के शंख घंटा झालर बाजत्त प्रभुनको

न॰ २१ दोयवेरतिलककीजै दोयवेरअक्षतलगाईये चंद्र
कावड़ीकरिकेचंद्रकाकेठिकानेजवाराकीकलंगीमेरा
सुद्धंधराईये चररगारविंदपरतुलसीसमर्पिये
फेरबीड़ा २ कुंमकुंमलगाइ आरोगादीमेंधरीये
येबीड़ासेनआरतीपरवाछेकिकसे औरजवाराकी
कलगीहै सोकुसेनआरतीभरेपाछेवड़ीहोय पादु
काजीकोतिलकअक्षतलगाइजवारासमर्पिये फेर
आरतीमुठीयावारिकरीये दंडवत्तकरिटेरादे संख
घंटा झलरबाजततेरखीये फेरिचोकीमांड़िधुपदी
पकरनो नेगकेमांट १० धरीये सधानाकीकटोरी १
आधिकीमेधरीये फेरिसंध्याभोगनित्यकोपासध
रीये संखोदिककरि तुलसी समर्पि बाहिरआईये सम
यभरेभोगसराय औरभोगधरि दसहरमांड्यो है
चोकमे तापर जवारा नांरवने कुंमकुंमधिरकनों
और खड़ीको चोक मंदिर कीतिवारीमे न॰ देहरीमें
न॰ सिंघासनआगेकरनो पाछेजवाराधरावने सें
नभोगसराय संध्याआरत्तीमोतीकीकीजै श्रृंगार
बड़ोकरिवागारहे पदुकावड़ोकरनो कंठमेदुग
दुगी १ मस्तकपरमोतीकीलड़पतरी अलकाव
लीकीलड़ १ सीसफूलमांगकको बीराऊपरासिर

पेचके ठिकाने ठाढे स्वरूपको सो दूसरे दिन बड़ो होयमं
गलापाछे श्रीकंठमे लड़ १ रहे पोटेन्तवदसहराकेदि
नशयनभोगमंदिरमे आवे शैय्या शैय्यामंदिरमें
बिछे जिजरीमे बिछे नहीं दसहराके ऊनके नामके वा
गाधरे सो प्रबोधनी ताई ओर जवाराधरे पाछे श्री
छवभोग आवे ताके संग ही बीड़ी आरोगे ओर दसमी
के दूसरे दिन होई तो दसहराको श्रृंगार धरनों रस्क
दशी होइ तो मुकट काछनीको श्रृंगार धरे रासके प
द गावे मूलनक्षत्रमे सरस्वतीको पूजन करनों
ओर श्रवणमे विसर्जन करनों ओर कार्त्तिकवदी
१ पड़वाते अन्नकूटके पद गावे दसहराते आ
कासदीवा रहे ते-जलसो आगे घीको दीवा करनों
आस्वन सुदी ॥ १५ ॥ सरदको उत्सव ॥ उत्सवरात्र
के भागकी प्रन्धो होई तादिन करनो अभ्यंगस्वेत
जरीकी काछनी श्रृंगार धरे रासके पद गावे मुकट
हीराको अथवा डांकको वा मोतीको मुकट काछ
नीको धारण करे हीराके आभरण सयनताल
अतलसकी बूंटीदार पीताम्बर लालदस्ताई
कोकिनारीनही गोपीवल्लभभोग मनोहरके
लडुवा ताकोमेदा ऽ॥ चोरठाऽ। घृत ऽ॥। खांड़

न.
२२

ऽ२। मिश्रीकीकरागी ऽ= चिरोंजी ऽ= सुगंधीमासा २ फेर
संध्याआरत्तीकरीये श्रंगारवडोनाहीहोय ग्वालनयां
डवरा आरोगीकेसेंनभोगआरोगे श्रंगार सहितफेरी
सेंनभोगआरोगे पाछेमंदिर केवाहिर तिवारीमेप्रभ्
नकोपधरावने सिंघासनत्यारवडमांडुनो खंडकेआ
गेपादकेठिकानेरुईकोगादेला बिछावनो ताऊपरसु
पेदवस्त्र बिछावनो ओरचोपड़ मांडुनो चोपड़केचा
र्योआडीतकियागोलधरने सिंघासनखंडतथा
सैयाकेनीचे सवजगेतिवारीमे सुपेदचादरबिछाव
नी तापरसैयापधरावनी सवसाजसिंघासनप्रभ्
तिचादरिऊपर रहेसवसाजसैयाकेपास चोकीऊप
रसोगरहे घेवर मेदासेर ऽ॥। घृत ऽ१ खांड ऽ२॥ सु
गंधमासा १ पिठीमीठीकचोरीकी सेर ऽ॥ घृत ऽ१
मेदा ऽ१ मिश्री ऽ१ बूरा ऽ॥ सुगंधमासा ८ चोरीठा
कोमराद ऽ॥। घृत ऽ॥। बूरा ऽ१॥ गजरानीखाजा मे
दा ऽ॥। घृत ऽ॥। बूरा ऽ१ सुगंधमासा ४ फीकीकचो
रीकीपिठी ऽ१ तामेछाछकेवड़ा मेदा ऽ॥। घृत ऽ१
गेरुआचोलाके मेदा ऽ॥। घृतसेर ऽ॥। मेदाकीपूरीको
मेदा ऽ१ घृत ऽ॥ फड़फड़ीया चणा त-दाजफड़फ
ड़ीया सिखरनवड़ीकीपिठीमूगकीमिजमां ऽ। घृत

ऽ। खांड ऽ१ सिखरराकोदही ऽ१॥ बूरा ऽ१॥ सुगंध
मासा ४ पराकीमिश्री ऽ। संजावकीखीरकोदूध
ऽ३ बूरा ऽ१ सुगंध मासे २ मेवामिठाईकीघालपे
सा देयदेय भर सब तरहको खांड ऽ२॥ वलमप
गी ऽ= वदामसादा तथालोनमिरचको ऽ। पिस्ता
सादा तथा लोनमिरचकोमिलिके ऽ। चिरोंजीसादा त
लोनामिरचकोमिलिके ऽ। चिलगोजाभुंजे त-सादा
ऽ। अखरोटभुंजे त-सादा ऽ। किसमिस ऽ= खोप
राकीवट्टीनग २ ताकेगोलगोल टूकसंभारिकेधरने
ऽ। ओरतरमेवा जित्तनीभांतिकेमिलेसोसवधरने
त-छुहारा स्ते-ऽ। त-गुलाबपाककीकत्तलीनग ५
अथ दूधघर कीसांमग्री॥ पेड़ासुपेदतथांवरफीदोनों
मिलिके दूध ऽ५ मिश्रीकीकरणी ऽ= तांमेबूरा ऽ१
बासोदीसुपेदकोदूध ऽ ४ तामेबूरा ऽ१। हांडी त-
मलाईकोदूध ऽ५ बूरासेर ऽ॥। दूधपूरीको त-म
लाईकोमिलिके दूधसेर ऽ८ दूधपूरीनग ८ तांमे
भरकाइवेकोबूरा ऽ॥ मांखन ऽ। बूराकीडवरीयातां
मेबूरा ऽ। पिसीमिश्रीकीकटोरीमे ऽ। सखड़ीमे
मेदा ऽ॥ घृत ऽ= बूरा ऽ१ धोवादार तथांफेर अरगजा
कीवररागी १ त-लवंग त-इलाइची त-जाइफलकेटूं

न॰ क न॰जावित्री न॰सुपारीकेफूल न॰अत्तरदांनी तथा
२३ रकतवककड़ीमेबीडा नग १० रहे इसामात्रश्रीमुखप
रचांदनीआइवेकोष्योत होइतो चांदनी मुखारविंदपरआ
वे नवमोतीकीआरती रूपेकोदीवड़ाधरिपेहेलेतो
सेनआरतीकरनी फेरिमोतीकीरूपेकोदीवड़ाधरि
सरदकीआरतीकरनी फेरिश्रंगारठाकुरजीकोवड़ो
करनों संध्याआर्तीकोश्रंगारबडोनहोयहे फेरिआ
भरण न॰वस्त्र सब ठाकुरकोसैयामेपोढायीयेसोसै
यापासरहे यहरीतिहे औरचांदनीमेमंदिरके ऊपर
आगासीमे पधरायवेकोमनोर्थहोई तोभोगऊ
परजुदो आवैसमयभरेसरे बीड़ा ६ आधिकीमे
धरने चांदनीकेभोगके फेरिभोगसराय पेहेले
सेनआरती कीकरिके दूसरी सरदकीमोतीकीआ
रतीकरनी॥ फेरिन्योछावर रु॰१ न॰राईलोंनहोई
फेरिश्रीमंदिरकीतिवरीमेपधारे॥ नवकालरघंटाशं
खबाजेनही न॰माला [illegible] अबीर हरदीके
पगमंडाहू होयनही॥ क्योंजोयह मनोर्थकोउत्सव
है॥ तातें॥ अथ कार्त्तिकवद॥ ६॥ तद्जोश्रीगोकुल
नाथजीकोउत्सव॥ गोपालवल्लभमेजजेबी मेदा
ऽ॥। घृत ऽ॥। खांड ऽ२॥ मीठेंशाकको खांड ऽ॥ छाछ

केवड़ाकोपिठी ऽ। घृत ऽ= जमायवेको दूध ऽ२ साव
डीमेसेव ऽ॥= घृत =) मर वृरा ऽ१ छड़ीपलदालहोय
तीनकूटा पापड़ वड़ी। त्सव कार्त्तिकवदो ॥६॥ टीकेतको
श्रंगार कार्त्तिकवद ॥८॥ जोर्के गोकुलेशजी उत्तरसोभाई
दूसकेघरे गादीनाकियाको याहीदिन श्रीलक्ष्मणजी
वल्लभजी महाराजनो जन्मदिवस गोपालवल्लभमे
बंदीजलेवी स्पोईमां त्प्ररधोपाटीया दूधघरमे १
रुपीयो त्प्रानो रुपीयानो दूधघर जालीनोमोहनथार
गोपालवल्लभमे जलेवी मेंदा) मनोहरकेलडुवा चेरी
ठामेदामिलिके ऽ॥= घृत ऽ॥। खांड ऽ२॥ सुगंधमांसा
२॥कार्त्तिकवद ॥१०॥ टीकेतको श्रंगार गोपालवल्लभ
भमेसेवकेलडुवा मेदा ऽ॥ घृत ऽ॥ खांड ऽ१॥ कार्त्तिक
वदी॥१०॥ वागा घेरदार स्वेतजरीको श्रीमस्तकपेचो
रा॥ कार्त्तिकवदी॥११॥ वागाचाकदारस्यांमजरीको
श्रीमस्तक पर चीरा संध्या जरीको टीकेतको श्रंगार
त्प्राभरण हीराके मिलवा गोपालवल्लभमे बुंदीके
लडुवा वेसन सेर ऽ॥ घृत ऽ॥ खांड ऽ१॥ सुगंध
मासा २ मिस्रीकीकणी ऽ= कार्त्तिकवदी॥१२॥ वा
गापीरीजरीकोघेरदार चीरापीरीजरीको टीकेतको
श्रंगार गोपालवल्लभमे मेवाटीकेलडुवा मेदा ऽ॥।

न- घृत ऽ॥। खांड ऽ॥। मिश्रीकीकणीऽ ॥। कार्तिकवदी॥
२४ १३॥ धनतेरस॥ श्रृंगार टीकेतको वस्त्र हरीजरीके वागा
चाकदार चीराहरीजरीके जोड़ीमांराककी गोपालवल्लभ
भमेफेरागीकी सामग्री मेदा ऽ॥। घृत ऽ॥। खांड ऽ।= मी
ठेशाक कीखांड ऽ॥ घृत ऽ= बूरा ऽ१ राजभोगमेधोई
दारपकोड़ीकीकढीहोई॥ कार्तिकवदी॥१४॥ रूपचोदस
केदिनसुं सैयामेसुपेतीसालकीदोइ विछेहे औरसु
जनीन-दोहरीचादर आजसुं विछेनही औरदिवारी
केदिननईसुपेती सालकीविछेहे न-औटिवेकीरजाई
नईबूंटीदाररहे वाकेभीतरसुपेदचादर २ दिनओढे
नही गिरदान-वालसु ऊपर वस्त्र सुपेत रहेतहीदिवारी
कीरातकुं तिलक ठाकुरकोकरे आक्षत लगाई बीड़ा २
परात पासधरिके छ्मांनकरावनो आसनओमसु
ककेबड़े करि अभ्यंगकराईये आवरासुंफेरक्रमसुं
नाराहेतमे वागाघेरदार सुथनहरीजरीकीफेर के
सरीवागाघेरदार फेरलालजरीकोवस्त्र चीरालालज
रीको जोड़ीहीरापन्नाकी गोपालवल्लभमे खड़के
प्रवा काठेको चुन ऽ॥। गुड़ ऽ॥। घृत ऽ॥। मीठेशाक
कीखांड ऽ॥ छाछवेबड़ाकीपिठी ऽ॥ घृत ऽ। आध
कीमे खीरिकोदूधसेर ऽ२॥ बूरा ऽ॥ हांडीमलड़ाकोदू

धसेर ऽ४ बूरा ऽ॥ सखड़ीमे गोपीवल्लभमेभातको

थारकेठिकांनेसेवकीथारआवे सेव ऽ१ घृत ऽ।

बूरा ऽ१॥ कार्तिकवदी ॥३० ॥ दिवारीटीकेतनकोश्रृं

गार आभूषणखेनजरीकोकुलही खेनजरीकोवा

गाचाकदार फुरकसाईजरीको लालजरीकोपटका

लालजरीकोसूथन साईखेनजरीकोभीतर दोऊव

स्त्रलालअस्तर जोड़ी हीरामाणक न-पन्नाको

निहरीधरे श्रृंगारधारीहोई गोरस्वरूपकोकस्तूरी

कोकमलपत्रहोय श्यामस्वरूपकोकेसरकोकम

लपत्रहोई गोपालवल्लभमे दीवड़ाअन्नकूटकी

सामग्रीकेआरोगे मेदा ऽ॥। घृत ऽ॥। खांड़ ऽ१॥ मी

ठेशाककीरखांड ऽ॥ छाछकेवड़ाकीपिठी ऽ॥ घृत ऽ।

हांड़ी मलड़ाकोदूध न- कांनजगाइवेको मिलके ऽ८

बूरा ऽ१। खीरिकोदूध आधिकीमे ऽ३ बूरा ऽ॥=

धनतेरसनेतेकेभाईदूजताई बेसनकी पपड़ीकीसां

मग्रीफिरत्री करकराकी नयाबटमा सेवकीआरोगे

ताकोबेसन ऽ॥ घृत ऽ। वड़ोबालभोगसेवकेल

डुवाकोआरोगे गोपीवल्लभमेसेव ऽ१ घृत ऽ।

बूरा ऽ२॥ राजभोगमे॥ धोईदार न-तीनकूटा पाप

ड़ कचरीयावड़ी छाछकेवड़ायेआरोगेमीठेतेल ऽ॥

न॰ सांझकोसंध्याआर्त्तीकरिके शृंगारबड़ोनहीकरीये ग्वा
२५ लकीत्तवकड़ीआरोगे उवराआरोगेकेसेंनभोगआ
वे सेंनभोगसरे मंदिरमेसिंघासनऊपरविराजे आ
चमनमुखवस्त्र कराय बीड़ा ४ दोउ और धरि आर
तीमोतीकीकरीये फेरचोतरेतोलमे ठाकुरवाजरा की
नेनहीनवाहिरकोनजगायवेपधारे और चालतीके
पगमंडाकरने हरदी न॰ गुलाल न॰ चोरीठाके ठठंताई
करने मंदिरसोलगाइ सूरज पोर तांई सोराहमे एकबीड़ी
आरोगे फेरचोतरापर चोडोल जगमोहनके वारठादेर
हिके पलासकेपांनसोटांपिके दूधकी हांड़ी आरोगे
वास्वो आड़ी उपर्नाकी ओट चोहोडोलको करे झरोख
राखिके टेरा काढिके दूसरी बीड़ी आरोगे आचमन मु
खवस्त्र यामें होत नहीहै फेरकीर्त्तनदोइहोई फेर
गायकोतिलककरे गायकोठोरलडुवाखवावे गाय
के दक्षराकांनमेकेहेनो जोकालिगोवर्द्धनपूजाकीवि
रीयां खेलिबेको आवोगे पाछेकीर्त्तनहोतनोचोकिया
मेपधारे सोउहांबीड़ा २ आरोगे फेरआरत्ती चंनको
दीवड़ाधारे मुठीयावारिकरनी फेरउहांत्ते टेरादेमंदि
रमेपधारे सोहटड़ीमे विराजे सिज्याऊपरगादीपधारे
आगेचोपड़माड़ीजाय नीचेस्वेत्तचादरविछावनी

सैयामंदिरमे हटरीमे मिठाई प्रमृति सब आवे लोंग

इलाइची जायफल केंटूक जावित्री सुपारी के फूल

बीड़ा नग २५ काचसैया पासरहे तकियाचोपड़के

चारयो माहे धरिदहे खिलोनाकी लवकडी और

रुकमनवकडेरवायो नामभेद करके याको भावय

हहै नेगाज्ञोको श्रीजी श्रीसहित जवापरेलेहे फे

रिझारी भरिधरीये हटड़ीके पदकीर्त्तनगावे फेर

मोत्तीकी चोपड़ भांतिकी आरतीरूपेकोदीवलाध

रिकीजे न्योछावर करि दंडवत्त करि हाथधोई

शृंगार वड़ो करीये भारी आभरनचंद्रका न गुंजा

श्रीस्वांमिनीजीके जो सब आभर्णरहे फेरवागाकु

लहीसुद्धां श्रीठाकुरजीको सैयामे पोढावने पास

गेहेना कीलवकड़ी रहि आवे झारीफेरि भरिधरीये

हांडी जजभारिके धरीये भोगपास अनसरवड़ी

पकवान छोटोकरनोसोभोग आवे श्रीनवनीत

प्रियाजीकी हांसूनोमिठाई आवेहे सोसांमग्री

श्रीजीके हांमेली आवेहै रसरवोरा सेर २ धन

धारा सेर २ तिलकी रेगटी ऽ१ रसरवोराकेल

डुवा अनोसरकरि दीपमालाको प्रदक्षणाकरि

केनिकसीये सैयामंदिरमे दीवारहे अपहट

न-
२६ ड़ोनी भोगकोविगत ॥ मिठाईकोरवांराभरा २५
तामेरवांड़दससेरकेरिवलोनाकरने पालरवीत-
गुजरात न-नारंगी न-पदक न-औरजोआवतहो
ई सोकरने पनजीनावर मात्रखांड़केकरनेनही
रिवलोनाकरनेसेर १० के साबुनीसेर १ सहेली
सेर २ रेवड़ी ऽ२ तिलपापड़ी ऽ २ तिनगीनीसे
ऽ२ रंगमेवाकेशरी न-सुपेद सेर ४ इलाइचीदा
रा ऽ४ होई दमीदा ऽ२ पत्तासा ऽ२ गुलाबपाक
ऽ२ सेवतीपाक ऽ२ पगीबदाम ऽ २ खोपरापाक
ऽ २ पेठापाक ऽ२ औरपकवाननहीआवे यह
रीतिहे औरतरमेवामिले सो ॥ अथअन्नकूट
कोविध ॥ सुद १ कोहोई चंद्रदर्शनजादिनानहो
ई तादिनअन्नकूटहोई अन्नकूटकोपिछलीरा
त्रिप्रहर १ होई नवउठीये-हाइसंरवनादकरि
ठाकुरकोजगाईहेइकोभोगसवउठाई-हाई शं
गारिभारिमंगलभोगधरीये भोगसरायकेमोती
कीआरतीकरि रुपेकोदीवलाधरिकीजे फेरि
स्नानकरायवेकीतोरीतिहै परंतुसमयपोहेचे न
ही तातेसालिग्रामजीको न-सिलाको न-चक्रजी
कोस्नानहोई प्रभुनकोशृंगारवड़ोकरियोहेइसोपा

धराईये फूलकीमाला पहराय आरसी दिखाई
ये अनकूटको शृंगार भरे पाछे बाहर कीनिबा
रीमे अष्टदल कोरी हरदीको करि बीड़ा धरे पा
नरि ऊपर पनवारे बीच बिछाय ता ऊपर घीमे कलधरा
यके भात पधरावनो जो अबेर न होय पालीके
फेरि भारि भारि दोऊ ओर गोपीवल्लभ भोगमें सेव
को आरवो पाटीया आवे और नित्यको भोग धरीये
समय भरे भोग सराय इतरो भोग धरीये ग्वालकी
लवकड़ी नही आरोगे टीलके लीऐ फेरि पालने बि
राजिके राजभोग आरोगिवेको भोगमंदिरमें पधारे
सो गोपालवल्लभमें सामग्री ॥ धांसके लडुवा ॥
धांससेर ऽ ॥ चोरीठा ऽ । सुगंधमासा ४ राज
भोगमे तीनकूंडा त-घोईदार त-छाछ केवड़ा
और नित्यके बालभोगके ठिकाने अन्नकूटकी
सामग्री मेलें पचमेल मगलातेलके सेतकेबंटा
नाईको राखनो फेरि समय भरे भोग सराय
मंदिरमे सिंघासन ऊपर पधारे बीड़ी आरोगिके
फेरि फूलकी माला धराई खंडपाट चोकी चोप
ड़ मांडि गेंद चोगान धारि कारी फेरिके भारि धरीये
और गोकरणी कुलही पर धरीये जरीके लालध

न. २८

रीये फेरि आरसी दिखाइ आरती मोतीकी रुपेकी दी
वड़ाधरिकरीये फेरि आरसी दिखाइ मालाबड़ीनकी
जिये फेरचालनीसो गुलालके न- अबीरके न हर
दीके पगमंडा जगमोहनतांईकरीये फेरघंटनाल
रबाजनबाकुरके चोडे एकमें धराइये ओलरघंटा
बाजत कीर्तन होत श्रीप्रभुजी चोडोलमें बिराजिकेगो
वर्द्धन प्रजाके ठिकांने पधारे गोवर्द्धन गोबरकोबो
कमेकरीये ऊखवस्त्रकेपुच्छ इक्षरगको राखीये
ऊखके पास बीचमे गदा करीये नामे पीताम्बरावि
छाईये और गोवर्द्धनके ऊपर छोटे २ रुपकेराके
राके रखीये छोटे २ गाडीये न- औंगाके झाड़ल
गाईये और उपनके झाड़ लगाई रुईलगाये
आसपास चारवो खोजे देर २ घृतभरिके बाती २ दो
३ प्रगट करिके धरीये और प्रजाको साज सब उ
हांधरीये दुध कसेड़ीमे धरीये न- दही एक
कसेरामे धरीये न- सीतलजल एकसेड़ी १ धरीये
न- झारी एकमे जल भरीये भोग कुनवाड़ा आरो
गे नवधारिवेके तीरते न- एकजोटीमे जलसंक
ल्पकोभरिधरीये गिलवाओ तथां अछूतन धरपीये
रात १ नग पांनको पड़गीपरधरीये [illegible] रगजो

एककटोरीमेधरीये केशरिघासिके न- बीड़ा २
नथांरामकटोरीमे हरदीघोरी न-एकमेकुम्कु
मघोस्यो थापानकेतीरे न-फूलकीमाला २ न-
कुमारिकाको १ गोवर्द्धनाशिलाको १ जलसों
स्नानक्स एक गोवर्द्धनजीको उपरको उपरणा
१ उढावनो गोवर्द्धनजीकासिलाहोई तहांसोप्र
जामेरपाछे घरधनीको तिलककरे अक्षत लगाई
गोवर्द्धनजीकी प्रसादी प्रसादीमालाधनीकोपह
रावे प्रसादी गोवरधनजीके उपरणा होइसोघर
धनीकोउढाईये गोवर्द्धनप्रजाहोई चुके कुन
वाड़ो अन्नारोगिचुके तिलक न-बीड़ाधरि आरतीर
पेकी नित्यकी चार खंडकी उतारीये फेरगोवर्द्धन
जीको रु-४) न्योछावरकरिके गोवर्द्धनासिलाको
ठाकुरको चोडोलमेपधरावे ता पाछे घरधनीको
तिलकप्रसादी न-अक्षतप्रसादीमालापहरायबी
डा ४ देई उपरणाउढावे गायोगावरकेगोवरधन
ऊपर खेले प्रदक्षणा रहिगई लिखनीसोप्रदक्षणा
करि गोवर्द्धनकी गोवर्द्धनाशिलाको ठाकुरपासपध
रावने कुंनवाड़ाकेमलड़ा १६ तामेतोसांमग्रीवि
सेवकेलडुवा २ ठोर २ याभांति एकएकमलड़ामें

* full page

न. २७ नग ४ धरने अैसेमलड़ा ८ सांमग्रीकेओर आ
ठमलडासीराकेकरने मलडानमेंअन्नप्रसादीकी
डानग १६ नटका ३२ मलडा १ पाछेटकादोई २
धरने उपरागिएकमलड़ापाछे हरदीसोकोरछेड़ारं
गिकेधरने १६ पुन्नाकोसाज सबधारिके फेरिठाकुर
चोडेमेंआयकेरजे सोचांवलनीके पगमंडकरने गला
ढाने-आवीर न-हरदीकीर्तन होत झालरघंटावाज
त ठाकुर बाहिर पधारे फेर दूधकी हांड़ीढाककेपां
नसुपारीकेम्चास्तो आड़ी उपरागिकी ओट करिकेचो
हडोलमेंआरोगे सरागामात्र राखिके सराईये फेर
आचमन मुखवस्त्रयाभोगको इफनांहीहे पाछे
बीड़ी १ घरधनीआरोगावे फेरदूसरीबीड़ीपरचा
रग आरोगावे सोठाकुरसोंदंडवत करिआज्ञामां
गिपासगिरिराजकीसिला चोहडोलमेंबिराजीहे
तिनकोदक्षरागहस्तमेंलेकेगोवरको गोवरधनकीयोहे
ताकेवीचगाढ कीनीहे तामेपीताम्बर चोहरेगला
लविछायत्तापरपधराईये फेरिघंटाझालरबा
जत संखनादहोत कीर्तन होत आचमनकरिप्रारा
नायमप करि हाथमे अक्षतजललेउत्तरमुखआपबेठि
आधेन्पादिसबकरेहे के सकलव्रजसेंभाज्ञासिध्यर्थ

गोवर्द्धनसमर्थ्यर्थं गोवर्द्धनपूजाकरिष्ये यह संक
ल्पपढि अक्षतछोड़िके नवकट्टीलेके सिलाजीकोदोइ
वेरतिलककीजै दोयबेर अक्षतलगावने ऊपर तु
लसीसमर्पि फेरीसंखमे न दूधकीकलसीमे न द
हीकेउपरान तुलसीसमर्पिये फेर हाथपर शंख
लेई सीतलजलसोप्रथमसिलाजीकोन गोबरके
गोवर्द्धनजीको स्नानकरावनो फेरदूधसोस्नान
करावे दोनोठिकानेफेरदहीसो दोनोठिकानेफे
रसीतलजलसोदोनोठिकाने फेरझालरघंटाबाजत
नेरागरवीये फेरीसिलाजीकोपोछिगादमेनेजलदूध
सबकेठिकेवस्त्रपीताम्बरवीछोहे सोठीककरि
बिछायवाहीपरसिलाजीकोपधराईये फेरसिला
जीकोचंदनचरचिये गोवरकेगोवरधनकोचंदन
नाखीये कुमकुमकेथापाचास्योत्र्पाडीदीजिये न ह
रदीभीजीकेथापाचास्योत्र्पाडीदीजिये फेरसिला
जीकोफूलकीमालापहराय गोवरकेगोवर्द्धनको
उपररागउढावनो ओरसिलाजीकोपीताम्बरउढाव
नो फेरीटेराकरिधूपदीपकरि झारी १ भरिधरिकेतु
लसीसंखोदिककरिके फेरकुनवाडाकेटोकराचोकी
ऊपरभोगधरीये समयभरेभोगसरायत्र्प्राचमनमु

नं· २९

खवरुस्त्रकराय बीड़ा २ सिलापासधरीये टेरारवोलिये
फेरिनित्यकीरूपेकीआरतीकेरवंडचास्यो प्रगटि बीचमे
ठाढेरहि उत्तरमुखकीओरआरतीकरीये फेरन्योछावर
टका ४ गोवर्द्धनजीऊपर करिके दंडवतकरिप्रदक्षणा
३ करिके [illegible] पीता
म्बरसुद्धीपधराईये मालातोउहांहीरहे सोमुखिया
घरधनीकोतिलककरे अक्षतलगावे प्रसादीगोवर्द्ध
नजीकोउपरणाउढायके फेरगाय खिलावै गायकोति
लककरि थापे गायकोकुंमकुंमहरदीके दै ग्वालकोति
लककरिथापेदेके मलड़ा १ गायको नं- ग्वालकोदेनो
उपररणादेनो फेरगाय गोवरके गोवरधनऊपरखेले
फेर कीर्तनीयाको मलड़ा उपरणा नं-दूधधरीयाकोम
लड़ाउपरणा फेरजिन जिनकोदेने होई उनकोदेने फेर
ठाकुरजीमंदिरमेपधारे सोजगमोहनके द्वारकेबीच
राईलोंन होय फेरमंदिरमेपधारिके सिंघासन ऊपरप
धारे फेरचंनकोबीड़ा नं-मठिका ४ अष्टदलकुंम
कुंमको करिआरती रूपेकीमेकरे फेरिसीतलभोग
आवे मिश्रीकोपना समयभरे भोगसराय आचमन
कराईये ॥ अथ अन्नकूटकेभोगकीविगत नथो सां
मग्रीकीविगत ॥ सेवकेलडुवाको॥ मेदा ५ घृत ।५

खांड ॥ऽ माटको॥ मेदा ऽ२ घृत ऽ२ खांड ऽ२॥गं
ठाको॥कूर ऽ२ घृत ऽ२ कूरसेवकोत्तयांभूजिवेकोघृ
त ऽ२ मेदा ऽ८ खांड़छांनी ऽ२ ॥ फूटीबूंदी॥ वेसन
॥ऽ घृत ॥ऽ खांड ऽ मकरपारा॥ मेदा ऽ२ घृत
ऽ२ खांड़ ऽ२ ~~केशरीदेइमरहुको~~॥ सुपेतन-के
शरी मेदा ऽ६ घृत ऽ७ खांड ऽ६ केशरतो-१॥मे
वाटी॥ मेदा ऽ२॥ घृत ऽ२॥ मेवा ऽ१॥ मिश्री ऽ१॥
पागिवेकीखांड ऽ२॥ सुगंध मासा ६ ॥कपूरनाड़ो
मेदा ऽ४ घृत ऽ४ मिश्रीकीबुकनीसेर ऽ४ ॥वावर
दोयत्तरहके॥ सुपेत्त न-केशरी मेदा ऽ६ घृत ऽ६
भरकायवेकोवूरा ऽ६॥खनमंडा॥ मेदा ऽ४ घृ
त ऽ४ खांड़ ऽ४ ॥जलेवी॥ मेदा ऽ४ घृत ऽ४
खांड ऽ२ ॥मनोहरके लडुवा॥ मेदाचोरीठा ऽ२॥
घृत ऽ२॥ खांड़ ऽ८ सुगंधमासा ६॥इदरसा॥
कोचोरीठा ऽ४ घृत ऽ४ गुड़ऽ३ खसखस ऽ२
चकुली॥ उरदकोचून ऽ२ चोरीठा ऽ॥= घृत ऽ२॥
तिलपाव ॥= ॥गुडके मुंठा॥ कूर ऽ४ गुड़ ऽ४
मेदा ऽ४ घृत ऽ८ कूरकोतयांभूजिवेको मिलिवे॥मा
लपूवा खांड़केत-गुड़के ॥ चून ऽ२ गुड ऽ२ घृत ऽ३
सिरवरनवड़ीमिलवा पिठी पिठी ऽ॥ घृत ऽ॥ पागीवेको

न- खांड़ ऽ२ सिखरनसेर ऽ४ तामेमिलाइवेकोबूरा ऽ४
३० थूलीकोरबासेर ऽ२ घृत्त ऽ२ खांड़ ऽ२ सुहागीदेइन
रहकी मेदासेर ऽ६ घृत्त ऽ६ थपड़ीतयांसेव तथा
रुरुराकीसेवकोमिलिके बेसनसेर ऽ१ घृत्त ऽ१
बिलसारुदोयमरहको खांड़सेर ऽ१॥ मुरव्यारो
इनरहके खांड़ ऽ१॥ मीठेसाकको खांड़ ऽ१ बोल
प्रसको गुड़ ऽ१। चक्रकोतथांगरुडाको कुरसेर ऽ६
मेदा ऽ८ कुरभुजिवेकोघृत तथांगरुडा तथाचक्रभुंजि
वेकोघृत्तसेर ५ऽ२ खांड़ छोनेली सेर ऽ६
वड़ाभीजेतथांकोरेमिलिके पिठी ऽ३ घृत्त ऽ१॥
मुगोड़ाकोरेत-छाछकेमिलिके पिठी ऽ२ घृत्त ऽ१
चरासेर ऽ२ वटारासेर ऽ२
अथअन्नकूटकोतथाहटड़ीकोसकोमेवातार्कोविगत
मिश्रीसवारिडेली ऽ॥ बदामकीमिंगी ऽ= तथां
भुंजीऽ= त- खांड़मेपागिवेकी ऽ।
पिस्ताभुजिवेके ऽ= तथासादा ऽ। चिरोजी ऽ=
भुंजिवेकोतथासादातथालडुवानकीचिरोंजी ऽ॥
खरबुंजाकेवीज ऽ= तथालडुवावीज ऽ॥
केलाकेबीज ऽ= तथांभुंजे ऽ= चिलगोजाभुंजे ऽ=
तथासादे ऽ= अखरोटभुंजे ऽ= त-सादा ऽ=

छुहारा ऽ= नयांपिंडखजूर ऽ। किसमिसदा
ख ऽ। खोपराकीवड़ी ताकेगोलटूंकसभारिके
धरने अथ दूधघरकोसांमग्रीअन्नकूटकोत
यां हलदीको मिलिके हांडोतयांमलडाकोदूध॥ सेर
ऽ दोऊघरको तांमे बूरा ऽ१॥ केसरमासा ६
गडिया सुपेद त-केसरी मिलिके दूध ऽ४ तांमे
बूरा ऽ॥ मिश्रीकी कराती बुकनी सेर ऽ॥ केसरमा
सा ३ तीन बरफीकेसरीतयांसुपेत ताकोदूध ऽ६
बूरा ऽ१॥ केसरमासा ६ बासोंदी केसरी तयां
सुपेद ताकोदूध ऽ८ बूरा ऽ१॥ केसरमासा ६
दूधपरी कोदूधसेर ।ऽ पूरी छोटीवड़ीनग ३०
उरकायवेकोबूरा ऽ१। मलाईकोदूध ऽ४ मी
ठेकूटाकोदूध ऽ२ बूरा ऽ। दूधमांखनकेलीरे
।ऽ२ जमायवेकोदूध ।।ऽ४ यामेते खिरखन त-
दही त-छाछकरनो त-राइता
घेड़ाकेसरी त-सुपेतकोदूध ऽ६ बूरा ऽ३
खीरि मारगाकाकी सेवकी संजावकी चोरवाकी
अन्नकूटकेभोगकी संजावकी तयांसेवकी मनि
काकी मिलिके दूध ।ऽ बूरा ऽ४ सुगंधमासा १२

अथ अन्नकूटकी सखड़ीकी सांमग्री नाकी विगत ॥ चो
खा मन ४५ चार मुंग ॥५ खरकी दार ५८
धोवा दार मुंगकी ५८ चणाकी दार ५८ सिखरन
भातके चोरवा ५१॥ नामे सिखरन ५४ नामे बूरा
५४ सुगंधमासा ६ बडीभातके चोरवा ५२ खट्टे
भातके चोरवा ५२ प्रखी दहीभातके चोरवा सा
ठी ५२ मिजाइवेको दही ५४ मेवाभातके प्रख
बी चोरवा ५१ नामे मेवा ५१ नांमे मिश्रीकी करी

छोरो ऽ। तांमेबूरा ऽ४ तांमेकेसरमासा २० तामेघृत ऽ॥ सेव ऽ२ घृत ऽ॥ बूरा ऽ४ सरवड़ीमेबेसन कादिवेको सेवको त-चकत्ताको त-खड़राको त-पत्रवड़ाको त-पकोड़ीको त-दीलेश्पाकको प्रभृति ऽ८ तिलमेदिठ्‌ठुजेनाको त-कचरीयाको तथापापड़वड़ी आदि लेके सेर ऽ४ नोनकूटा त-पकोड़ीकीकढ़ी त-तिलवड़ी त-ढेवरी त-खड़रा की त-मीठी त-पापड़ त-वड़ी त-मिरचवड़ी त-कचरीया त-बेसनके चकत्ता त-सादा त-पांनके पत्रवड़ा त-मंजेश्पाक त-मिरचकेश्पाक त-दीले त-वघारे त-रायता आदिलेके जित्तनेबने आवे तित्तनेकरने बरााभिजोयबेके ऽ४ बटाणा ऽ४ वालसेर ऽ२ चोला ऽ२ पापड़केपीठा ऽ४ तांमेसकर पारा तथासेव तथांमिरच वड़ी तथांसं गफली वड़ीकीपिठी सेर ४ तांमेतेतिलवड़ीकर नी तिलसेर ऽ१॥ मूगवड़ीकीपिठीसेर ऽ२

फेरि अन्नकूटको भोग अनसखड़ी साजिये सब और
सखड़ी भोग तो शृंगार भरे ते प्रारंभ भातको भयो होहि है
सो भात सब साजि के बीचमे चक्र धरनों और चारि गं
डासो ठाकुरकी ओर चित्र रहे तेसे गाड़ने एक चक्र
के चित्रकी आड़ी एक चक्र के पिछाड़ी बीचमे दोइ आ
डी गेंडा चक्र के संगाड़ भात पर फेर तुलसी की
माला गेंडा के चारयो आड़ी फिर तो पहराय सखड़ी अ-
अनसखड़ी सब भोग साजि तुलसी सर्वत्र समर्पिये
अनसखड़ी भोग आपने यहां धरतो पर टोकरा
आवे है और टोकरान पर टोकरा सां मिलतीके आ
य जाय है यह रीति है जलकी हांडी २ धरीये अन

सरवडोत्त-सखड़ी भोगके बीचमे सखीया ऊपरजल भरिके हंडी दोय ता ऊपर छल्ला दोइ ढांपिये ऊपर रूपेके कटोरा सोदोनोनपर राखिये ताकेऊपर हंडी दोनो आडी एकपकधरीये सब हंडी जलकी भरो वापर छल्ला ढांपि ठाकुरके पास धरीये बड़ोक पर १ कटोरा हंडी ऊपर रूपेको राखीये धूपदीप करि संखोदिक करीये तुलसी सर्वत्र समर्पिके फेरि बाहिर टेरा देई आय बड़ी नीलागावे गोदवेठि गोपालकहेत्त० यह घड़ी ४ कोसमय करि इत्त ने मे काऊको खानो होई तो वहखायलेइ अनसरव ड़ी फेरि समय भये भोग सराय माला पहराय आचमन मुखवस्त्र कराय (मोत्तीकी आरत्तीहोई रूपेकोदीवड़ा धारे करे फेरि न्योछावर) एकसको रामे बीड़ा नग २ धारे फेरि दर्सनखुले सो कीर्त्तन ४ होइके फेरि हाटेश्वर रूप ... राय मोतीकी आरत्ती २ रूपेकोदीवड़ा धारि करे फेरि न्योछावर करे रु० राई लोंन करिके फेरि भोगसरि बेमांड़े अनसरवड़ी फेरि माहात्मके कीर्तनहोई महिमा मेजानीजे अवन छांडो चरन कमल अनसखड़ी भोगसरि बके टेरा आवे

न. ३३ जोवेगहोइतोअंतोपेड़ोबिछाइ सैयाकोसाज सवसैया
पासधरि अनोसरकीजिये ओर अवेरभई होईत
वतोउत्थापनभोगभेलोआवे आरतीकरिशृं
गार वड़ोकरीये वागामात्र रहे (ओरकाह्रे रहे) अवारकेलीरिंगवा
लनहोय इनका इधको आवे भोगसरायकेनभोग
धरिये सबघरमेभोगसराय मंदिरमे पधरायआ
चमनमुखवस्त्र कराय माला पहराय आरतीमोती
कीसघनकरीये फेरिवागावड़ोकरि ठाकुरकोसैया
मे पधरायबीड़ाईये सैयापास सव साजमांड़ीये
फेरि अनोसरकरिके वाहिरनिकसिये फेरिमहाप्र
साद लीजिये ओर सुपेदीभाईदूजके दिनसपन
आरतीपाछेचढे

इति अन्नकूटकीविधिसमाप्तं ॥ कार्तिकसुद ॥ २
टीकेतकोशृंगार अभ्यंग वस्त्र खीमखापलाल
केधरे वागाघेरदारचीरालालजरीको पटुकाह
स्योसूतरू सथनहरीमेपरसो स्वामिनीजीकोसा
ड़ीलाललजरीकी भीतरदोऊवस्त्र हरेपाटके श्री
वालकृष्णजीको न. पादुकाजीको लालखीमखा
पकेवस्त्र गोपीवल्लभभोगमेभातकीथारके
टिकानेखीचड़ीकीथालआवे न. कचरीया न. पाप

३ और जो नित्य आवत होइ सो गोपालवल्लभ में म
नोहर के लडुवा मेदा चोरीठा ऽ॥= घृत ऽ॥। खांड
ऽ२॥ मीठे शाक की खांड ऽ२॥ छाछ के वड़ा की पिठी
ऽ॥ घृत ऽ= राजभोग में गुड़ की डली धरनी आतांजु
ऽ= हांडी मलाई पनदूध ऽ४ आमचूर ऽ॥ वधो
दही ऽ॥। अथ सरवड़ी की विगत॥ राजभोग
में सरवड़ी की थार आवे खीचड़ी की खीचड़ी
ऽ४ आधि की में घृत सेर ऽ॥ सेव को मेदा ऽ॥ को
पाटीया घृत ऽ= बूरा ऽ१। दही भात के साको चोखा
ऽ॥ दही सेर ऽ१ कचरीया की पाजस बत्तर हके क
चरीया भुजी तथा पापड़ आरोगे और जा दिन भात
की थार गोपीवल्लभ में आरोगे ता दिन कचरीया
न आरोगे तीन कूदा धोईदार अन सरवड़ी मे
छाछ के वड़ा और जो नित्य आवे सो और रा
जभोग में सामग्री खीचड़ा आरोगे वंदीसकर
पारा न·मांट न·मठा न·सेव के लडुवा को से
न के बंटा तोई आरोगे अन्नकूट की सामग्री
भाईदूज के दिन मंगलभोग ते लेके सेन के बंटा
तोई आरोगे खीचड़ी सामग्री पांचमें की अन्न
कूट की में तो रहे सो आरोगे सरवड़ी अन सरवड़ी

न-
३४ भोग सब सज चुके पाछे झालर घंटा बाजत आरती
मोतीकी चंदनको दीवड़ा धारिके मुठीया ४ धरि आर
तीप्रगटिके फेरि तिलककीजे प्रभुको अक्षत लगा
इ बीडा २ के कुंमकुंमलगाइ धरीये फेरि आर्ती
रिजदीसा बारि आरती करीये फेर हाथ धोई थारसीं
केफेरि मुलसंग चरणारविंद पर समर्पे सब सामग्री
सब सामग्री सरबड़ी अनसरबड़ीमे समर्पिये फेरि
संख्योदिक करिके धूपदीप कीजे फेरि टेरादेई बाहिर
बेठीये समय भरे भोग सराय आर्ती करीये अनो
सर करीये आगे नित्यकी रीति प्रमाण ॥ कार्तिक
सुदी ॥ ८ ॥ गोपाष्टमी ॥ मुकट हीराको काछनी जं
रीकी पीताम्बर ओटनी ओटे लाल दरयाई की सूथ
न अनलसकी चोली गोपीवल्लभमे नित्य आवेसो
गोपालवल्लभमे मनो हर के लडुवा मेदा चोरी ठा
मिजिके ऽ॥= घृत ऽ॥। खांड ऽ२। खोवा ऽ॥ घृत
ऽ= बूरा ऽ१ पकोडीकी कढी बड़ी मलदार घोवा
मंगकी अनसरबड़ीमे मीठो शाक खांड सेर ऽ॥
खीरिको दूध ऽ२ तामे बूरा ऽ॥ पापड़ वड़ी तिल
की ओरजो नित्य आवेसो पाट पर चोपड़ केठिको
नेवाघ बकरी मांडे ॥ कार्तिक सुद ॥ ९ ॥ अक्षयनोमी

शृंगार अन्नकूट को होई शृंगार भरे पाछे ठाकुरकी प्र
दक्षणा करीये गोपालवल्लभमे वंदीके लडुवा बेस
न ऽ।।। घृत ऽ।।। खांड ऽ२। मिश्रीकी कणी ऽ= सीत
कालके वस्त्र रुई के सुथनजीमे धरने कवाय १ न-स्व
पन १ श्रीगुसांईजीके उत्सव पर नये धरने कवाय
१ न-स्यपन १ वसंतमे राजभोगमे खबरकी दार
और नित्यकीरीति ॥कार्तिक सुद ॥ ११॥ प्रबोधनी
को उत्सव पेहेले दिन पिछवाई सिंघासन प्रभृति
साज श्याम मखमलको बांधि राखनो रात्रिको
फेर गादी तकीयान को सुपेदी उतारनी सोत्तेरस
को चढावनी और एकादसीको सवेरे मङ्गल होई
नव रुई के बागा न-सिखावस्त्र न-स्यपन न-मोजा
ये पेहेले दिन स्यपन आरती भये पाछे चरणारविंद
पर समर्पिनी राखीये सो सवेरे शृंगारमे धराईये
वस्त्र लाल तासके सुनेरी कुल्हे लाल तासकी धरे
अभ्यंग करावनो लाल तासको बागा चाकदार ध
रे कुल्हे लाल जरीकी धरे स्यपन तासकी हरी
श्रीस्वामिनीजीको साडी लाल तासकी भीतरदोउ
वस्त्र हरे तासके रुई के बागा के भीतर सुपेद खासा
को धरें बागा आभरण हीरा पन्नाके धरें हमेल प्रभृति

न- घरे ओरभद्रानहोई तवसांजकोदेवोत्थापनहोयसंध्या
३५ आरतीभरेहोई त-सवेरे गोपीवल्लभभरेदेवोत्थापन
होई भद्रानहोइ तवगोपीवल्लभमे सेव ऽ२। घृत ऽ।
खांड ऽ२॥ सेवको आरवो पाटीयाआरोगे मंडपजोगेसां
रुपाहोय नोपरात पवित्रा गोपीवल्लभमा आवे राजभो
गमे तीनकूटा घोईदार पापड वडी वगैरेकी सामग्री
रसोई बालभोगमे करीहगेइसो गोपालवल्लभमेबूंदीस
करपारा ओरखीरिआधिकीमे ओरनित्यको ओरसवे
रेदेवोत्थापनहोय तवदसमीकीरात्रिकोही कोडीवहवेटी
खडीसोकरिराखे ओरएकादसीकीरात्रकोजोदेव
उत्थापनहोय तवराजभोगआरतीभरेपाछे वहवेटी
कोडीपूरे ।।अथदेवोत्थापनकीविधि ।। गडेरी ३२ को
मंडपकरिए आठआठ गडेरीके ऊपर नाडाबांधिके
कोडीपरधरीये चाल्यो आडीदीवा २ घृतके प्रगटके
वातीदोय २ धरीये फेरिरात्रकोजोदेवोत्थापनहोय
तवसंध्याआरतीरात्रकोघडी १ गयेकरनो फेरचो
कीसाटाके मंडपकेभीतरमांडनो फेरिप्रभुकोगादी
सुद्धांमंडपकेभीतरचोकीपरपधरावने पंचाम्रतको
साजसवलायधरनो कुंमकुंमतथा अक्षत्ततिलकके
तीनेहाथमेलायधरने चंदन न-फुलैलकीमाला

न॰ तुलसी न॰ सीतलजल न॰ शंख न॰ अंगवस्त्र न॰
पीताम्बर जन्माष्टमीको आगे होइसो राखनों और रु
इकोसाज गद्दर फरगल प्रभृति एक चोकीपर धरि रा
खिये अगोठी सांझीको २ धूपघुगरसके द्वारि धरि
राखिये एक टोकरोमें वगामनवंचनाको भाजी न॰ स
करकंद न॰ बेर न॰ सिंघाडा धरीये पाछे पातनमांहि
कुंमकुंमको अष्टदल करीये पीढा रूपेको ऊपर फेर
ठाकुरको दंडवत करि ठाकुरकी चोकी घंटा झालर सं
खनाद कीर्त्तन होत एकजनो आगे एकजनो पीछे २
हिके चोकी उठावे तब तीनवार श्लोक पढे तीनवार
चोकी उठावे श्लो॰ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविंद त्यज्य निद्रां
जगत्पते त्वयाचोत्थाप्यमानेन उत्थितं भुवनत्रयं
१ यह श्लोक तीनवार पढीये और तीनही विरियां
श्रीठाकुरजीकी चोकी उठाइये फेरि ठाकुरसो आज्ञा
मांगि श्रीबालकृष्णजीको पीढापर पातनमें पधराइये
फेरि पूर्वमुख बैठके संकल्प कीजे प्राणानायम्य के
रि प्रक्षालन जल हाथमें लेई अद्येत्यादि कृष्णभगवतः श्री
पुरुषोत्तमस्य देवोत्थापनानंतरं पंचामृतस्नान महं क
रिष्ये ३ सं॰ न्य॰ फेरि तिलक करि अक्षत लगा
ये तुलसी चरणारविंद पर समर्पिये पंचामृतमेंन

न-
३६

लसीडारि संखमेंतुलसीडारि शंखहाथमेंले अक्षतम

स्तकके वड़े करिकेपंचामृतस्नान कराईये प्रथमदूध

सो फेरि दहीसो फेरि घृतसों फेरि बूरासो फेरिमधुसोफेर

दूधसो फेरि सीत लजलसो फेर चंदनसोस्नान कराई

अंगवस्त्र करि ठाकुरकी चोकीपर पधारावनो फेरठा

कुरकी तिलक करि अक्षत लगाइ फूलकी माला पह

राय गहूल उढावनो पीताम्बरजो पंचामृतभयोहे

तिनकोही उढावनो फेरि पंचामृतभयोहे उनको

तिलक करि अक्षत लगाई पीताम्बर जन्माष्टमीको

उनकोउटाइ केसरि छिराकिये फेरि रुईके वस्त्रउ

नकोउढावनो फेरिअंगीठीपासधरिये टोकरीवें

गनचनावेरसकरकंद सिंघाड़ाकीकरिराखीहे सो

धरिये पाछेअदक्सराग करि दंडवत्तकरिके शंखघंटा

झालर बाजत्तने राखीये फेरि चोकी मांड़ि धूपदीप

कीजे झारिफेरिभरिये वेदीन- सकरपारान- सि

खरन वड़ीन- मिश्रीकोपनान- सघानाकीकटो

री न- फलाहर न- नरसेवा समर्पिके फेर तुलसी

समर्पि संखोदिक करि झारिकोनालवारवोलि टेरा

दे बाहिर आईये समयभरे भोगसराय आचमन

मुखवस्त्र कराय बीड़ा २ दोयधरिके फेरि मोतीको

आरत्ती कोडीकी माड़ीनांमे रूपेको दीवड़ा धरिकीजै पाछे रु-१) न्योछावर त्तथां राई लोंनकरनो दंडवत्त करि पंचाम्रत्त करायेउनको ठिकांनेपधरायके ठाकुरकी चोकी गादी सिंघासन पर पधराय फेरिश्रंगार नोरहे ही और ग्वालहोइ ड्वरश्रावे ओरसेन भोग आवे और जो सवेरे देवोत्थापन होय तब गोपी वल्लभभोग आरोगे तबकड़ी डवरा आरोगिके पाल नारूलिके देवोत्थापन होय सवेरे यह रीत्तिहै देवोत्था पन देवोत्थापनको भोग आरोगे फलाहर राजभो गसाय आरोगे आरत्ती भयेपाछे डेरा आइके फेरि ठाकुर पलनारूलके राजभोग आरोगिबे पधारे यह रीत्तिहै ॥ अथ उत्सव भोग त-जागरराभोग ३ त-गोपालवल्लभ यादी मेत्ते आवे ॥ वंदीको वेसन ड१॥ घृत्त ड१॥ खांड़ ड१॥ सकर पाराको मेदा ड२॥ घृत्त ड२॥ खांड़ ड२॥ जलेबीको मेदा ड२॥ घृत्त ड२॥ खां ड ड६॥ च्यार घड़ी रात्त मे आरती भये पाछे सा जसब वड़ो करनो नही मडमोरहे सेंन आरत्ती भये पें ड़ा विछावनों और सैयाको साज सब सैयापास धरनो घड़ी १ दर्सन बंद रारिबके फेर पेड़ा उठायके दर्सनके कमाड़ खोलने सो घड़ी ४ फेर टेरा दई फेरि भोग धर

न-३७ नों बूंदी न-सकरपारा न-जलेबी साधाना की कटोरी जु
लसी संखोदिक करनों झारी फेरि भरि धरनी बाहर बेठी
ये समय भरे भोग सराय आचमन मुखवस्त्र कराइ बी
ड़ा २ बंटा मे धरि दर्सन खुले आरती मोती की हयरूप की
(दीवड़ा धरिके संखनाद होय आरती होये दर्सन घ
घड़ी होई फेरि टेरा देइ झारी भरि के भोग उत्सव के आ
वे दूसरे बूंदी न-सकरपारा न-जलेबी न-सधाना
की कटोरी धरि संखोदिक करि जलसी समर्पि बाहिर
आय बेठीये समय भरे भोग सराय आचमन मु
खवस्त्र कराय बीड़ा २ बंटा मे धरि दर्सन खोलिये
आरती मोती की चक्र की करीये दर्सन घड़ी ४ होई
फेरि टेरा दीजे फेरि झारी भरि धरीये बूंदी न-सकर
पारा न-सधाना की कटोरी धरनी जलसी संखोदिक
करि बाहिर आइ बेठीये समय भरे भोग सराय बीड़ा
२ बंटा मे धारे आचमन मुखवस्त्र कराई दर्सन खो
लिये आरती मोती की गदा की करीये फेरि दर्सन
होत रहे जब पाछली रात्रि घड़ी ६ न-७ रहे तब टेरा
दीजिये मंदिर के मुखीया भीतरीया न-आप देहकृत्य
दन्तधावनादिक करि के न्हाइ तिलक मुद्रादि के प्राणा
नायाम्प करि चरणोदिक लेइ के मंदिर मे जाईये हाथ

धोयमंगलभोगधरीये समयभरेभोगसरायआ
चमनमुखवस्त्रकराइ बीडा २धरिटेरारवोलिरे मं
गलआरतीमोतीकीपद्मकीकरीये टेरदीजेफेर
श्रृंगारजोकरतेहै ग्वालगरमजी त-गिरराजच
क्रजीकोस्नानकरावनो फेरमालापहरायदरसन
श्रृंगारकेहोई आरसीदिखाइकेटेरादीजेफेर
झारीभरिश्रीगोपीवल्लभभोगधरीये कार्तिकसु
द। १२।। वडेश्रीगिरधरजीकोउत्सवहै सोश्रृंगाररतोरा
त्नकोहीरेहे राजभोगमे पादुकाजीकोभयवाहस्ताक्षर
जीकोविराजतहोइतो पलगडीकेनीचेहरदीकोचोकक
रिये पादुकाजीहोइतो दूधसोपेहलेपादुकाजीकोस्नान
कराय फेरिपादुकाजीकोअभ्यंगकराईये केसरसोस्ना
नकराईये गोपीवल्लभमे जलेबीकोमेदा ऽ२।। घृ
तऽ२।। पागिवेकीखांड ऽ७।। छूटीबूंदीकोवेसन
ऽ२।। घृत ऽ२।। पागवेकीखांड ऽ२।। सिखरनवडी
मोलवापिट्ठी ऽ। घृतऽ। खांडऽ१ सिखरन ऽ१।। तां
मेवूराऽ१।। छाछकेवडाकीपिठीऽ। घृतऽ= मीठे
शाककीखांड ऽ।। विलसारुकीखांड ऽ।। वासोंदीदोय
तरहकी तांमेदूधऽ४ तापेवूराऽ१ केसरमासा ४
श्रीजीवनजीकाकाजीनेमनोर्थसं ३ उत्सवके ४ भात